bjpkamaljyoti@gmail.com www.up.bjp.org
संवत 2079 युगाब्द 5124 कुल पृष्ठ –32 अगस्त द्वितीय – अंक – 2

वर्तमान कमल ज्योति

आज़ादी का अमृत महोत्सव

सुराज की विचार यात्रा
वर्तमान कमल ज्योति

भारत रत्न अटल जी पुण्य तिथि, श्रद्धांजलि सभा, लखनऊ

हिन्दू हृदय सम्राट कल्याण सिंह जी

प्रतिमा का अनावरण, लखनऊ

हार्दिक बधाई !

अनन्त शुभकामनाएं...

वर्तमान
कमल ज्योति

संरक्षक
श्री स्वतंत्र देव सिंह
सम्पादक
अरुण कान्त त्रिपाठी
प्रबन्ध सम्पादक
राजकुमार
प्रकाशक
प्रो0 श्याम नन्दन सिंह
पृष्ठ संयोजक
ओम प्रकाश पंडित

कार्यालय
कमल ज्योति, 7–विधानसभा मार्ग
लखनऊ – 1
फोन :– 0522–2200187
फैक्स :– 0522–2612437

Email-
bjpkamaljyoti@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित आलेखों से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं

मुद्रक
नूतन ऑफसेट मुद्रण केन्द्र, राजेन्द्र नगर, लखनऊ–4

www.up.bjp.org
bjpkamaljyoti
bjpkamaljyoti
@bjpkamaljyoti

सम्पादकीय

नियति, प्रकृति और मानव में बदलाव से ही निरंतरता

मनुष्य बदलाव से बचना चाहता है, लेकिन परिवर्तन शाश्वत नियम है, और इसके बिना विकास की संभावनाएं भी नहीं हैं। विकास बड़ा या छोटा नहीं होता वह तो केवल परिवर्तन की प्रक्रिया मात्र है। ब्रम्हांड में निरंतर परिवर्तन होता रहता है। प्राकृतिक परिवर्तन के दौर मे हमारी पृथ्वी में इससे गुजरी होगी। यह सदैव ऐसी नहीं रही होगी। एक उक्ति है... सदैव पहाड़ों की तरह अडिग रहना चाहिये लेकिन, सूक्ष्मता से अवलोकन करें तो निरंतर क्षरण, उंचाई में परिवर्तन और कटाव से पहाड़ भी निरंतर बदलाव के वाहक है। यह कुछ ऐसा है कि कोई एक नदी में स्नान करने के लिये अंदर जाये और स्नान के उपरांत बाहर निकले तो उसके हर बार अंदर बाहर आने जाने से नदी के जल की स्थिरता में बदलाव होता है परन्तु जल के सत्व में बदलाव नहीं होता है।

तात्पर्य यह कि इन सब में जो बदलाव का जो तत्व दिखता है वह है परिवर्तन।

परिवर्तन एक सार्वभौमिक सत्य है। आप चाहे या न चाहे किन्तु परिवर्तन होकर रहेगा। जो कल वर्तमान था वह आज भूतकाल होगा। जो भविष्य है वह एक दिन वर्तमान होगा पुनः देखते ही देखते वह भूतकाल बन जायेगा। इसलिये परिवर्तन को सदैव स्वीकार करें। स्वयं में परिवर्तन करने के लिये तैयार रहे। सकारात्मक परिवर्तन से समाज को कुछ नया प्रदान करें। क्योंकि, आपके चाहने या न चाहने से परितर्वन की प्रक्रिया रूकने वाली नहीं है। परिवर्तन रचनात्मकता लाती है। यह न बड़ी होती है न ही छोटी होती है। परिवर्तन से पीढ़ियों के बीच का अंतर भी घटता है। समाज में बदलाव लाने का मार्ग प्रशस्त होता है।

समाज का ही एक अंग संगठन होता है। संगठन का घटक ही परिवर्तन होता है। बिना परिवर्तन के संगठन का विकास ठहर जाता है। वह चलता प्रतीत होता होता है लेकिन उसका पथ संकरा हो जाता है। लेनिक बदलाव मात्र से पथ का संकीर्ण मार्ग बड़ा हो जाता है। संगठन की विकासात्मक प्रक्रिया बदलने लगती है। संगठन, जिसे एक अथवा अधिक साझा लक्ष्य (यों) की प्राप्ति के लिये कार्यरत दो या ज्यादा लोगों के रूप में परिभाषित किया जाता है, की अवधारणा के मूल में है। इस संदर्भ में विकास यह धारणा है कि समय बीतने पर एक संगठन अपने लक्ष्यों की प्राप्ति में अधिक प्रभावी बन सकता है। संगठनात्मक विकास किसी संगठन की प्रभावकारिता और व्यावहारिकता को बढ़ाने के लिये एक नियोजित, संगठन–स्तरीय प्रयास होता है। वॉरेन बेनिस (**Warren Bennis**) ने संगठनात्मक विकास का उल्लेख परिवर्तन के प्रति एक प्रतिक्रिया, एक जटिल शिक्षात्मक रणनीति के रूप में किया है, जिसका उद्देश्य संगठन के विश्वासों, दृष्टिकोणों, मूल्यों और संरचना को बदलना होता है, ताकि उन्हें नई प्रौद्योगिकियों, विपणन और चुनौतियों, तथा स्वतः परिवर्तन की आश्चर्यचकित कर देने वाली दर के साथ बेहतर ढंग से अनुकूलित किया जा सके। संगठनात्मक विकास न तो किसी सरकार को बेहतर बनाने के लिये की गई गतिविधि है न ही यह संगठन का प्रशिक्षण कार्य है यह एक विशिष्ट प्रकार का परिणाम प्राप्त करने के लिये एक विशिष्ट प्रकार की प्रक्रिया है। इसलिये सरकार और संगठन दोनों ही एक दूसरे के पूरक होते हैं। दोनों का तालमेल बेहतर परिणाम देने का कारक बनता है। यदि कारक पर प्रहार होगा तो उससे संगठन और सरकार दोनों की प्रभावशीलता में कमी आती है।

आंतरिक और बाह्य कार्यात्मकता और संबंधों के आधार पर सरकार की क्षमता को सुधारना संगठनात्मक विकास का उद्देश्य है। इसमें व्यक्तियों व समूहों के बीच उन्नत अंतःप्रक्रियाएं, अधिक प्रभावी संवाद, संगठन और सरकार की सभी प्रकार की समस्याओं का सामना कर पाने की क्षमता में सुधार, अधिक प्रभावी निर्णय प्रक्रियाएं, अधिक उपयुक्त नेतृत्व शैली, विनाशात्मक विवाद से निपटने में उन्नत कौशल और सदस्यों के बीच आपसी विश्वास और सहयोग के उच्च–स्तर जैसी बातें शामिल होती हैं। विधि–अन्वेषण, कारणों की गहन छानबीन, अनुमानों का प्रयोगात्मक परीक्षण और परिणामों की समीक्षा–सरकार और संगठन प्रभावकारिता के लिये आवश्यक हैं।

संभोजनं संकथनं संप्रीतिश्च्व परसपरं।
प्रसहय एवं वातेन शक्यो घर्षवितुं क्षणाम।।

akatri.t@gmail.com

उदित होगी ! नये भारत की महागाथा : द्रौपदी मुर्मु

मेरे प्यारे देशवासियो,
नमस्कार!

छिहत्तरवें स्वाधीनता दिवस की पूर्व संध्या पर देश–विदेश में रहने वाले सभी भारतीयों को मैं हार्दिक बधाई देती हूं। इस गौरवपूर्ण अवसर पर आपको संबोधित करते हुए मुझे बहुत खुशी हो रही है। एक स्वाधीन देश के रूप में भारत 75 साल पूरे कर रहा है। 14 अगस्त के दिन को विभाजन–विभीषिका स्मृति–दिवस के रूप में मनाया जा रहा है। इस स्मृति दिवस को मनाने का उद्देश्य सामाजिक सद्भाव, मानव सशक्तीकरण और एकता को बढ़ावा देना है। 15 अगस्त 1947 के दिन हमने औपनिवेशिक शासन की बेड़ियों को काट दिया था। उस दिन हमने अपनी नियति को नया स्वरूप देने का निर्णय लिया था। उस शुभ–दिवस की वर्षगांठ मनाते हुए हम लोग सभी स्वाधीनता सेनानियों को सादर नमन करते हैं। उन्होंने अपना सर्वस्व बलिदान कर दिया ताकि हम सब एक स्वाधीन भारत में सांस ले सकें।

भारत की आजादी हमारे साथ–साथ विश्व में लोकतंत्र के हर समर्थक के लिए उत्सव का विषय है। जब भारत स्वाधीन हुआ तो अनेक अंतरराष्ट्रीय नेताओं और विचारकों ने हमारी लोकतान्त्रिक शासन प्रणाली की सफलता के विषय में आशंका व्यक्त की थी। उनकी इस आशंका के कई कारण भी थे। उन दिनों लोकतंत्र आर्थिक रूप से उन्नत राष्ट्रों तक ही सीमित था। विदेशी शासकों ने वर्षों तक भारत का शोषण किया था। इस कारण भारत के लोग गरीबी और अशिक्षा से जूझ रहे थे। लेकिन भारतवासियों ने उन लोगों की आशंकाओं को गलत साबित कर दिया। भारत की मिट्टी में लोकतंत्र की जड़ें लगातार गहरी और मजबूत होती गईं।

अधिकांश लोकतान्त्रिक देशों में वोट देने का अधिकार प्राप्त करने के लिए महिलाओं को लंबे समय तक संघर्ष करना पड़ा था। लेकिन हमारे गणतंत्र की शुरुआत से ही भारत ने सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार को अपनाया। इस प्रकार आधुनिक भारत के निर्माताओं ने प्रत्येक वयस्क नागरिक को राष्ट्र–निर्माण की सामूहिक प्रक्रिया में भाग लेने का अवसर प्रदान किया। भारत को यह श्रेय जाता है कि उसने विश्व समुदाय को लोकतंत्र की वास्तविक क्षमता से परिचित कराया। मैं मानती हूं कि भारत की यह उपलब्धि केवल संयोग नहीं थी। सभ्यता के आरंभ में ही भारत–भूमि के संतों और महात्माओं ने सभी प्राणियों की समानता व एकता पर आधारित जीवन–दृष्टि विकसित कर ली थी। महात्मा गांधी जैसे महानायकों के नेतृत्व में हुए स्वाधीनता संग्राम के दौरान हमारे प्राचीन जीवन–मूल्यों को आधुनिक युग में फिर से स्थापित किया गया। इसी कारण से हमारे लोकतंत्र में भारतीयता के तत्व दिखाई देते हैं। गांधीजी सत्ता के विकेंद्रीकरण और जन–साधारण को अधिकार–सम्पन्न बनाने के पक्षधर थे।

पिछले 75 सप्ताह से हमारे देश में स्वाधीनता संग्राम के महान आदर्शों का स्मरण किया जा रहा है। 'आज़ादी का अमृत महोत्सव' मार्च 2021 में दांडी यात्रा की स्मृति को फिर से जीवंत रूप देकर शुरू किया गया। उस युगांतरकारी आंदोलन ने हमारे संघर्ष को विश्व–पटल पर स्थापित किया। उसे सम्मान देकर हमारे इस महोत्सव की शुरुआत की गई। यह महोत्सव भारत की जनता को समर्पित है। देशवासियों द्वारा हासिल की गई सफलता के आधार पर 'आत्मनिर्भर भारत' के निर्माण का संकल्प भी इस उत्सव का हिस्सा है। हर आयु वर्ग के नागरिक पूरे देश में आयोजित इस महोत्सव के कार्यक्रमों में उत्साहपूर्वक भाग ले रहे हैं। यह भव्य महोत्सव अब 'हर घर तिरंगा अभियान' के साथ आगे बढ़ रहा है। आज देश के कोने–कोने में हमारा तिरंगा शान से लहरा रहा है। स्वाधीनता आंदोलन के आदर्शों के प्रति इतने व्यापक स्तर पर लोगों में जागरूकता को देखकर हमारे स्वाधीनता सेनानी अवश्य प्रफुल्लित हुए होते।

हमारा गौरवशाली स्वाधीनता संग्राम इस विशाल भारत–भूमि में बहादुरी के साथ संचालित होता रहा। अनेक महान स्वाधीनता सेनानियों ने वीरता के उदाहरण प्रस्तुत किए और राष्ट्र–जागरण की मशाल अगली पीढ़ी को सौंपी। अनेक वीर योद्धाओं तथा उनके संघर्षों विशेषकर किसानों और आदिवासी समुदाय के वीरों का योगदान एक लंबे समय तक सामूहिक स्मृति से बाहर रहा। पिछले वर्ष से हर 15 नवंबर को 'जन–जातीय गौरव

दिवस' के रूप में मनाने का सरकार का निर्णय स्वागत–योग्य है। हमारे जन–जातीय महानायक केवल स्थानीय या क्षेत्रीय प्रतीक नहीं हैं बल्कि वे पूरे देश के लिए प्रेरणा का स्रोत हैं।

प्यारे देशवासियो,

एक राष्ट्र के लिए, विशेष रूप से भारत जैसे प्राचीन देश के लंबे इतिहास में, 75 वर्ष का समय बहुत छोटा प्रतीत होता है। लेकिन व्यक्तिगत स्तर पर यह काल–खंड एक जीवन–यात्रा जैसा है। हमारे वरिष्ठ नागरिकों ने अपने जीवनकाल में अद्‌भुत परिवर्तन देखे हैं। वे गवाह हैं कि कैसे आजादी के बाद सभी पीढ़ियों ने कड़ी मेहनत की, विशाल चुनौतियों का सामना किया और स्वयं अपने भाग्य–विधाता बने। इस दौर में हमने जो कुछ सीखा है वह सब उपयोगी साबित होगा क्योंकि हम राष्ट्र की यात्रा में एक ऐतिहासिक पड़ाव की ओर आगे बढ़ रहे हैं। हम सब 2047 में स्वाधीनता के शताब्दी–उत्सव तक की 25 वर्ष की अवधि यानि भारत के अमृत–काल में प्रवेश कर रहे हैं।

हमारा संकल्प है कि वर्ष 2047 तक हम अपने स्वाधीनता सेनानियों के सपनों को पूरी तरह साकार कर लेंगे। इसी काल–खंड में हम बाबासाहब भीमराव आम्बेडकर के नेतृत्व में संविधान का निर्माण करने वाली विभूतियों के अपेपवद को साकार कर चुके होंगे। एक आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में हम पहले से ही तत्पर हैं। वह एक ऐसा भारत होगा जो अपनी संभावनाओं को साकार कर चुका होगा।

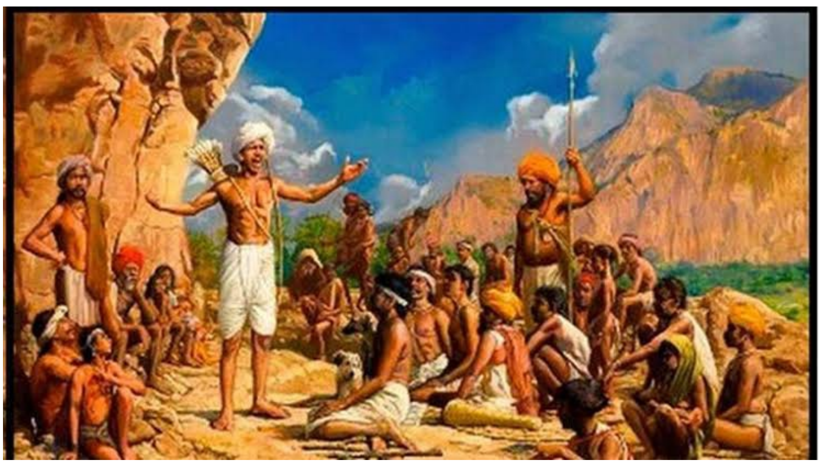

दुनिया ने हाल के वर्षों में एक नए भारत को उभरते हुए देखा है, खासकर COVID–19 के प्रकोप के बाद। इस महामारी का सामना हमने जिस तरह किया है उसकी सर्वत्र सराहना की गई है। हमने देश में ही निर्मित वैक्सीन के साथ मानव इतिहास का सबसे बड़ा टीकाकरण अभियान शुरू किया। पिछले महीने हमने दो सौ करोड़ वैक्सीन कवरेज का आंकड़ा पार कर लिया है। इस महामारी का सामना करने में हमारी उपलब्धियां विश्व के अनेक विकसित देशों से अधिक रही हैं। इस प्रशंसनीय उपलब्धि के लिए हम अपने वैज्ञानिकों, डॉक्टरों, नर्सों, पैरामेडिक्स और टीकाकरण से जुड़े कर्मचारियों के आभारी हैं। इस आपदा में कोरोना योद्धाओं द्वारा किया गया योगदान विशेष रूप से प्रशंसनीय है।

कोरोना महामारी ने पूरे विश्व में मानव–जीवन और अर्थ–व्यवस्थाओं पर कठोर प्रहार किया है। जब दुनिया इस गंभीर संकट के आर्थिक परिणामों से जूझ रही थी तब भारत ने स्वयं को संभाला और अब पुनः तीव्र गति से आगे बढ़ने लगा है। इस समय भारत दुनिया में सबसे तेजी से बढ़ रही प्रमुख अर्थ–व्यवस्थाओं में से एक है। भारत के start&up eco&system का विश्व में ऊंचा स्थान है। हमारे देश में start&ups की सफलता, विशेषकर unicorns की बढ़ती हुई संख्या, हमारी औद्योगिक प्रगति का शानदार उदाहरण है। विश्व में चल रही आर्थिक कठिनाई के विपरीत, भारत की अर्थ–व्यवस्था को तेजी से आगे बढ़ाने का श्रेय सरकार तथा नीति–निर्माताओं को जाता है। पिछले कुछ वर्षों के दौरान physical और digital infrastructure के विकास में अभूतपूर्व प्रगति हुई है। प्रधानमंत्री गति–शक्ति योजना के द्वारा connectivity को बेहतर बनाया जा रहा है। परिवहन के जल, थल, वायु आदि पर आधारित सभी माध्यमों को भली–भांति एक दूसरे के साथ जोड़कर पूरे देश में आवागमन को सुगम बनाया जा रहा है। प्रगति के प्रति हमारे देश में दिखाई दे रहे उत्साह का श्रेय कड़ी मेहनत करने वाले हमारे किसान व मजदूर भाई–बहनों को भी जाता है। साथ ही व्यवसाय की सूझ–बूझ से समृद्धि का सृजन करने वाले हमारे उद्यमियों को भी जाता है। सबसे अधिक खुशी की बात यह है कि देश का आर्थिक विकास और अधिक समावेशी होता जा रहा है तथा क्षेत्रीय विषमताएं भी कम हो रही हैं।

लेकिन यह तो केवल शुरुआत ही है। दूरगामी परिणामों वाले सुधारों और नीतियों द्वारा इन परिवर्तनों की आधार–भूमि पहले से ही तैयार की जा रही थी। उदाहरण के लिए Digital India अभियान द्वारा ज्ञान पर आधारित अर्थ–व्यवस्था की आधारशिला स्थापित की जा रही है। 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति' का उद्देश्य भावी पीढ़ी को औद्योगिक क्रांति के अगले चरण के लिए तैयार करना तथा उन्हें हमारी विरासत के साथ फिर से जोड़ना भी है।

आर्थिक प्रगति से देशवासियों का जीवन और भी सुगम होता जा रहा है। आर्थिक सुधारों के साथ–साथ जन–कल्याण के नए कदम भी उठाए जा रहे हैं। 'प्रधानमंत्री आवास योजना' की सहायता से गरीब के पास स्वयं का घर होना अब एक सपना नहीं रह गया है बल्कि सच्चाई का रूप ले चुका है। इसी तरह 'जल जीवन मिशन' के अंतर्गत'हर घर जल' योजना पर कार्य चल रहा है।

इन उपायों का और इसी तरह के अन्य प्रयासों का उद्देश्य सभी को, विशेषकर गरीबों को,बुनियादी सुविधाएं प्रदान करना है। भारत में आज संवेदनशीलता व करुणा के जीवन–मूल्यों को प्रमुखता दी जा रही है। इन जीवन–मूल्यों का मुख्य उद्देश्य हमारे वंचित, जरूरतमंद तथा समाज के हाशिये पर रहने वाले लोगों के कल्याण हेतु कार्य करना है। हमारे राष्ट्रीय मूल्यों को,

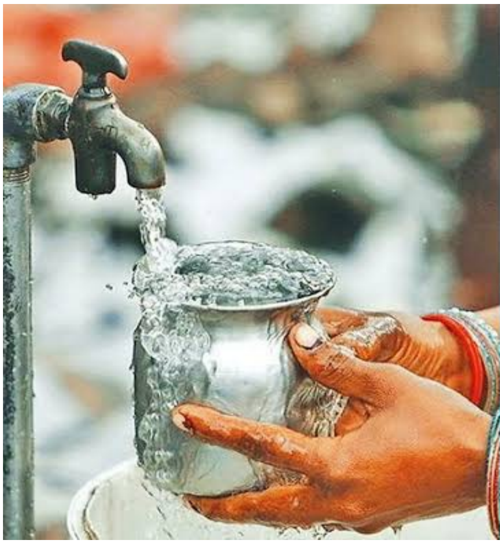

नागरिकों के मूल कर्तव्यों के रूप में, भारत के संविधान में समाहित किया गया है। देश के प्रत्येक नागरिक से मेरा अनुरोध है कि वे अपने मूल कर्तव्यों के बारे में जानें, उनका पालन करें, जिससे हमारा राष्ट्र नई ऊंचाइयों को छू सके।

प्यारे देशवासियो,

आज देश में स्वास्थ्य, शिक्षा और अर्थ–व्यवस्था तथा इनके साथ जुड़े अन्य क्षेत्रों में जो अच्छे बदलाव दिखाई दे रहे हैं उनके मूल में सुशासन पर विशेष बल दिए जाने की प्रमुख भूमिका है। जब 'राष्ट्र सर्वोपरि' की भावना से कार्य किया जाता है तो उसका प्रभाव प्रत्येक निर्णय एवं कार्य–क्षेत्र में दिखाई देता है। यह बदलाव विश्व समुदाय में भारत की प्रतिष्ठा में भी दिखाई दे रहा है।भारत के नए आत्म–विश्वास का स्रोत देश के युवा, किसान और सबसे बढ़कर देश की महिलाएं हैं। अब देश में स्त्री–पुरुष के आधार पर असमानता कम हो रही है। महिलाएं अनेक रूढ़ियों और बाधाओं को पार करते हुए आगे बढ़ रही हैं। सामाजिक और राजनीतिक प्रक्रियाओं में उनकी बढ़ती भागीदारी निर्णायक साबित होगी। आज हमारी पंचायती राज संस्थाओं में निर्वाचित महिला प्रतिनिधियों की संख्या चौदह लाख से कहीं अधिक है।

हमारे देश की बहुत सी उम्मीदें हमारी बेटियों पर टिकी हुई हैं। समुचित अवसर मिलने पर वे शानदार सफलता हासिल कर सकती हैं। अनेक बेटियों ने हाल ही में सम्पन्न हुए राष्ट्रमंडल खेलों में देश का गौरव बढ़ाया है। हमारे खिलाड़ी अन्य अंतर–राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में भी देश को गौरवान्वित कर रहे हैं। हमारे बहुत से विजेता समाज के वंचित वर्गों में से आते हैं। हमारी बेटियां fighter&pilot से लेकर space scientist होने तक हर क्षेत्र में अपना परचम लहरा रही हैं।

प्यारे देशवासियो,

जब हम स्वाधीनता दिवस मनाते हैं तो वास्तव में हम अपनी 'भारतीयता' का उत्सव मनाते हैं। हमारा भारत अनेक विविधताओं से भरा देश है। परंतु इस विविधता के साथ ही हम सभी में कुछ न कुछ ऐसा है जो एक समान है। यही समानता हम सभी देशवासियों को एक सूत्र में पिरोती है तथा 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' की भावना के साथ आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती है।

भारत अपने पहाड़ों, नदियों, झीलों और वनों तथा उन क्षेत्रों में रहने वाले जीव–जंतुओं के कारण भी अत्यंत आकर्षक है। आज जब हमारे पर्यावरण के सम्मुख नई–नई चुनौतियां आ रही हैं तब हमें भारत की सुंदरता से जुड़ी हर चीज का दृढ़तापूर्वक संरक्षण करना चाहिए। जल, मिट्टी और जैविक विविधता का संरक्षण हमारी भावी पीढ़ियों के प्रति हमारा कर्तव्य है। प्रकृति की देखभाल माँ की तरह करना हमारी भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग रहा है। हम भारतवासी अपनी पारंपरिक जीवन–शैली से पूरी दुनिया को सही राह दिखा सकते हैं। योग एवं आयुर्वेद विश्व–समुदाय को भारत का अमूल्य उपहार है जिसकी लोकप्रियता पूरी दुनिया में निरंतर बढ़ रही है।

प्यारे देशवासियो,

हमारे पास जो कुछ भी है वह हमारी मातृभूमि का दिया हुआ है। इसलिए हमें अपने देश की सुरक्षा, प्रगति और समृद्धि के लिए अपना सब कुछ अर्पण कर देने का संकल्प लेना चाहिए। हमारे अस्तित्व की सार्थकता एक महान भारत के निर्माण में ही दिखाई देगी। कन्नड़ा भाषा के माध्यम से भारतीय साहित्य को समृद्ध करने वाले महान राष्ट्रवादी कवि 'कुवेम्पु' ने कहा हैः

नानु अलिवे, नीनु अलिवे
नम्मा एलु–बुगल मेले
मूडु–वुदु मूडु–वुदु
नवभारत–द लीले।

अर्थात

'मैं नहीं रहूंगा
न रहोगे तुम
परन्तु हमारी अस्थियों पर
उदित होगी,उदित होगी
नये भारत की महागाथा।'

उस राष्ट्रवादी कवि का यह स्पष्ट आह्वान है कि मातृ–भूमि तथा देशवासियों के उत्थान के लिए सर्वस्व बलिदान करना हमारा आदर्श होना चाहिए। इन आदर्शों को अपनाने के लिए मैं अपने देश के युवाओं से विशेष अनुरोध करती हूं। वे युवा ही 2047 के भारत का निर्माण करेंगे।

अपना सम्बोधन समाप्त करने से पहले मैं भारत के सशस्त्र बलों, विदेशों में स्थित भारतीय मिशनों और अपनी मातृभूमि को गौरवान्वित करने वाले प्रवासी–भारतीयों को स्वाधीनता दिवस की बधाई देती हूं। मैं सभी देशवासियों के सुखद और मंगलमय जीवन के लिए शुभकामनाएं व्यक्त करती हूं।

धन्यवाद, जय हिन्द!

पंचप्रण के साथ अमृतकाल मे प्रवेश....

आजादी के 75 वर्ष पूर्ण होने पर देशवासियों को अनेक–अनेक शुभकामनाएं। बहुत–बहुत बधाई। न सिर्फ हिन्दुस्तान का हर कोना, लेकिन दुनिया के हर कोने में आज किसी न किसी रूप में भारतीयों के द्वारा या भारत के प्रति अपार प्रेम रखने वालों के द्वारा विश्व के हर कोने में यह हमारा तिरंगा आन–बान–शान के साथ लहरा रहा है। मैं विश्वभर में फैले हुए भारत प्रेमियों को, भारतीयों को आजादी के इस अमृत महोत्सरव की बहुत–बहुत बधाई देता हूं।

आज का यह दिवस ऐतिहासिक दिवस है। एक पुण्य पड़ाव, एक नई राह, एक नये संकल्पो और नये सामर्थ्य के साथ कदम बढ़ाने का यह शुभ अवसर है। आजादी के जंग में गुलामी का पूरा कालंखण्ड संघर्ष में बीता है। हिन्दुस्तावन का कोई कोना ऐसा नहीं था, कोई काल ऐसा नहीं था, जब देशवासियों ने सैकड़ों सालों तक गुलामी के खिलाफ जंग न किया हो। जीवन न खपाया हो, यातनाएं न झेली हो, आहूति न दी हो। आज हम सब देशवासियों के लिए ऐसे हर महापुरूष को, हर त्यागी को, हर बलिदानी को नमन करने का अवसर है। उनका ऋण स्वीकार करने का अवसर है और उनका स्मीरण करते हुए उनके सपनों को जल्द से जल्द पूरा करने का संकल्प लेने का भी अवसर है। हम सभी देशवासी कृतज्ञ है, पूज्य बापू के, नेता जी सुभाष चंद्र बोस के बाबा साहेब अम्बेडकर के, वीर सावरकर के, जिन्होंने कर्तव्य पथ पर जीवन को खपा दिया। कर्तव्य पथ ही उनका जीवन पथ रहा। यह देश कृतज्ञ है, मंगल पांडे, तात्या टोपे, भगत सिंह, सुखदेव, राजगुरू, चंद्रशेखर आजाद, अशफाक उल्ला खां, राम प्रसाद बिस्मिल अनगिनत ऐसे हमारे क्रांति वीरों ने अंग्रेजों की हुकुमत की नींव हिला दी थी। यह राष्ट्र कृतज्ञ है, उन वीरांगनाओं के लिए, रानी लक्ष्मीबाई हो, झलकारी बाई, दुर्गा भाभी, रानी गाइदिन्ल्यू, रानी चेनम्माज, बेगम हजरत महल, वेलु नाच्चियार, भारत की नारी शक्ति क्या होती है।

एक पुण्य पड़ाव, एक न राह, एक नये संकल्पो और नये सामर्थ्य के साथ कदम बढ़ाने का यह शुभ अवसर है।

भारत की नारी शक्ति का संकल्प क्या होता है। भारत की नारी त्याग और बलिदान की क्या पराकाष्ठा कर सकती है, वैसी अनगिनत वीरांगनाओं का स्मारण करते हुए हर हिन्दुस्तानी गर्व से भर जाता है। आजादी का जंग भी लड़ने वाले और आजादी के बाद देश बनाने वाले डॉ. राजेन्द्री प्रसाद जी हों, नेहरू जी हों, सरदार वल्लभ भाई पटेल, श्यामा प्रसाद मुखर्जी, लाल बहादुर शास्त्री, दीनदयाल उपाध्याय, जय प्रकाश नारायण, राम मनोहर लोहिया, आचार्य विनोबाभावे, नाना जी देशमुख, सुब्रह्मण्येम भारती, अनगिनत ऐसे महापुरुषों को आज नमन करने का अवसर है।

हम आजादी की जंग की चर्चा करते हैं तो हम उन जंगलों में जीने वाले हमारे आदिवासी समाज का भी गौरव करना हम नहीं भूल सकते हैं। भगवान बिरसा मुंडा, सिद्धू कान्हू, अल्लूरी सीताराम राजू, गोविंद गुरू, अनगिनत नाम हैं जिन्होंने आजादी के आंदोलन की आवाज बनकर के दूर–सदूर जंगलों में भी मेरे आदिवासी भाई–बहनों, मेरी माताओं, मेरे युवकों में मातृभूमि के लिए जीने–मरने के लिए प्रेरणा जगाई। ये देश का सौभाग्य रहा है कि आजादी की जंग के कई रूप रहे हैं और उसमें एक रूप वो भी था जिसमें नारायण गुरू हो, स्वामी विवेकानंद हो, महर्षि अरविंदो हो, गुरुदेव रविन्द्र नाथ टैगोर हो, ऐसे अनेक महापुरुष हिन्दुस्तान के हर कोने में, हर गांव में भारत की चेतना को जगाते रहे। भारत को चेतनमन बनाते रहे।

अमृत महोत्सव के दौरान देश ने पूरे एक साल से हम देख रहे हैं। 2021 में दांढी यात्रा से प्रारंभ हुआ। स्मृति दिवस को संवरते हुए हिन्दुस्तान के हर जिले में, हर कोने में देशवासियों ने आजादी के अमृत महोत्सेव के लक्ष्य वृद्धि कार्यक्रम किए। शायद इतिहास में इतना विशाल, व्यापक, एक ही मकसद का उत्सव मनाया गया हो वो शायद ये पहली घटना हुई है और हिन्दुस्तन

के हर कोने में उन सभी महापुरुषों को याद करने का प्रयास किया गया जिनको किसी न किसी कारणवंश इतिहास में जगह ने मिली या उनको भूला दिया गया था। आज देश ने खोज–खोज करके हर कोने में ऐसे वीरों को, महापुरुषों को, त्यागियों को, बलिदानियों को सत्यवीरों को याद किया, नमन किया। अमृत महोत्सव के दरम्यिान इन सभी महापुरुषों को नमन करने अवसर रहा। कल 14 अगस्त को भारत ने विभाजन विभिषिका स्मृति दिवस भी बड़े भारी मन से हृदय के गहरे घावों को याद करते हुए उन कोटि–कोटि जनों ने बहुत कुछ सहन किया था, तिरंगे की शान के लिए सहन किया था। मातृभूमि की मिट्टी से मोहब्बत के कारण सहन किया था और धैर्य नहीं खोया था। भारत के प्रति प्रेम ने नई जिंदगी की शुरूआत करने का उनका संकल्प नमन करने योग्य है, प्रेरणा पाने योग्य है।

आज जब हम आजादी का अमृत महोत्सव मना रहे हैं तो पिछले 75 साल में देश के लिए जीने मरने वाले, देश की सुरक्षा करने वाले, देश के संकल्पों को पूरा करने वाले, चाहे सेना के जवान हों, पुलिस के कर्मी हों, शासन में बैठे हुए ब्यू–रोक्रेट्स हों, जनप्रतिनिधि हों, स्थानीय स्वराज की संस्थाओं के शासक–प्रशासक रहे हों, राज्यों के शासक–प्रशासक रहे हों, केंद्र के शासक–प्रशासक रहे हों, 75 साल में इन सबके योगदान को भी आज स्मेरण करने का अवसर है और देश के कोटि–कोटि नागरिकों को भी, जिन्होंने 75 साल में अनेक प्रकार की कठिनाइयों के बीच भी देश को आगे बढ़ाने के लिए अपने से जो हो सका वो करने का प्रयास किया है।

मेरे प्यारे देशवासियों,

75 साल की हमारी ये यात्रा अनेक उतार–चढ़ाव से भरी हुई है। सुख–दुःख की छाया मंडराती रही है और इसके बीच भी हमारे देशवासियों ने उपलब्धियां की हैं, पुरुषार्थ किया है, हार नहीं मानी है। संकल्पों को ओझल नहीं होने दिया है और इसलिए, और ये भी सच्चाुई है कि सैंकड़ों सालों के गुलामी के कालखंड ने भारत के मन को, भारत के मानवी की भावनाओं को गहरे घाव दिए थे, गहरी चोटें पहुंचाई थीं, लेकिन उसके भीतर एक जिद भी थी, एक जिजीविषा भी थी, एक जुनून भी था, एक जोश भी था। और उसके कारण अभावों के बीच में भी, उपहास के बीच में भी और जब आजादी की जंग अंतिम चरण में था तो देश को डराने के लिए, निराश करने के लिए, हताश करने के लिए सारे उपाय किए गए थे। अगर आजादी आई अंग्रेज चले जाएंगे तो देश टूट जाएगा, बिखर जाएंगे, लोग अंदर–अंदर लड़ करके मर जाएंगे, कुछ नहीं बचेगा, अंधकार युग में भारत चला जाएगा, न जाने क्या–क्या आशंकाएं व्यक्त की गई थीं। लेकिन उनको पता नहीं था ये हिन्दुस्तान की मिट्टी है, इस मिट्टी में वो सामर्थ्य है जो शासकों से भी परे सामर्थ्य का एक अंतरप्रभाव लेकर जीता रहा है, सदियों तक जीता रहा है और उसी का परिणाम है, हमने क्या कुछ नहीं झेला है, कभी अन्न का संकट झेला, कभी युद्ध के शिकार हो गए।

आंतकवाद ने डगर–डगर चुनौतियां पैदा कीं, निर्दोष नागरिकों को मौत के घाट उतार दिया गया। छद्म युद्ध चलते रहे, प्राकृतिक आपदाएं आती रही, सफलता विफलता, आशा निराशा, न जाने कितने पड़ाव आए हैं। लेकिन इन पड़ाव के बीच भी भारत आगे बढ़ता रहा है। भारत की विविधता जो औरों को भारत के लिए बोझ लगती थी। वो भारत की विविधता ही भारत की अनमोल शक्ति है। शक्ति का एक अटूट प्रमाण है। दुनिया को पता नहीं था कि भारत के पास एक inherent सामर्थ्य है, एक संस्कार सरिता है, एक मन मस्तिष्क् का, विचारों का बंधन है। और वो है भारत लोकतंत्र की जननी है, Mother of Democracy है और जिनके जहन में लोकतंत्र होता है वे जब संकल्प कर के चल पड़ते हैं, वो सामर्थ्य दुनिया की बड़ी–बड़ी सल्तनतों के लिए भी संकट का काल लेकर के आती है। ये Mother of Democracy, ये लोकतंत्र की जननी, हमारे भारत ने सिद्ध कर दिया कि हमारे पास एक अनमोल सामर्थ्य है।

मेरे प्यारे देशवासियों,

हिमालय की कन्दराएँ हो, हर कोने में महात्मा गांधी का जो सपना था आखिरी इंसान की चिंता करने का, महात्मा गांधी जी की जो आकांक्षा थी अंतिम छोर पर बैठे हुए व्यक्ति को समर्थ

बनाने की, मैंने अपने आप को उसके लिए समर्पित किया है, और उन 8 साल का नतीजा और आजादी के इतने दशकों का अनुभव आज 75 साल के बाद जब अमृत काल की ओर कदम रख रहे हैं, अमृत काल की ये पहली प्रभात है तब मैं एक ऐसे सामर्थ्य को देख रहा हूं। और जिससे में गर्व से भर जाता हूं।

देशवासियों,

मैं आज देश का सबसे बड़ा सौभाग्य ये देख रहा हूं। कि भारत का जनमन आकांक्षित जनमन है। Aspirational Society किसी भी देश की बहुत बड़ी अमानत होती है। और हमें गर्व है कि आज हिन्दुस्तान के हर कोने में, हर समाज के हर वर्ग में, हर तबके में, आकांक्षाएं उफान पर हैं। देश का हर नागरिक चीजें बदलना चाहता है, बदलते देखना चाहता है, लेकिन इंतजार करने को तैयार नहीं है, अपनी आंखों के सामने देखना चाहता है, कर्तव्यन से जुड़ कर करना चाहता है। वो गति चाहता है, प्रगति चाहता है। 75 साल में संजोय हुए सारे सपने अपनी ही आंखों के सामने पूरा करने के लिए वो लालायित है, उत्साहित है, उतावला भी है।

कुछ लोगों को इसके कारण संकट हो सकता है। क्योंकि जब aspirational society होती है तब सरकारों को भी तलवार की धार पर चलना पड़ता है। सरकारों को भी समय के साथ दौड़ना पड़ता है और मुझे विश्वासस है चाहे केन्द्र सरकार हो, राज्य सरकार हो, स्थानीय स्वराज्य की संस्थाएं हों, किसी भी प्रकार की शासन व्यावस्था क्यों न हो, हर किसी को इस aspirational society को address करना पड़ेगा, उनकी आकांक्षाओं के लिए हम ज्यादा इंतजार नहीं कर सकते। हमारे इस aspirational society ने लंबे अरसे तक इंतजार किया है। लेकिन अब वो अपनी आने वाली पीढ़ी को इंतजार में जीने के लिए मजबूर करने को तैयार नहीं हैं और इसलिए ये अमृत काल का पहला प्रभात हमें उस aspirational society के आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए बहुत बड़ा सुनहरा अवसर लेकर के आई है।

हमने पिछले दिनों देखा है एक और ताकत का हमने अनुभव किया है और वो है भारत में सामूहिक चेतना पुनर्जागरण हुआ है। एक सामूहिक चेतना का पुनर्जागरण आजादी के इतने संघर्ष में जो अमृत था, वो अब संजोया जा रहा है, संकलित हो रहा है। संकल्प में परिवर्तित हो रहा है, पुरुषार्थ की पराकाष्ठा जुड़ रही है और सिद्धि का मार्ग नजर आ रहा है। ये चेतना, मैं समझता हूं कि चेतना का जागरण ये पुनर्जागरण ये हमारी सबसे बड़ी अमानत है और ये पुनर्जागरण देखिए 10 अगस्तं तक लोगों को पता तक नहीं होगा शायद कि देश के भीतर कौन सी ताकत है। लेकिन पिछले तीन दिन से जिस प्रकार से तिरंगे झंडे को लेकर के तिरंगा की यात्रा को लेकर करके देश चल पड़ा है। बड़े–बड़े social science के experts वे भी शायद कल्प ना नहीं कर सकते कि मेरे भीतर के अंदर कि मेरे देश के भीतर कितना बड़ा सामर्थ है, एक तिरंगे झंडे ने दिखा दिया है। ये पुनर्चेतना, पुनर्जागरण का पल है। ये लोग समझ नहीं पाएं हैं।

जब देश जनता कर्फ्यू के लिए हिन्दुस्तान का हर कोना निकल पड़ता है, तब उस चेतना की अनुभूति होती है। जब देश ताली, थाली बजाकर के corona warriors के साथ कंधे से कंधा मिलाकर के खड़ा को जाता है, तब चेतना की अनुभूति होती है। जब दीया जलाकर के corona warrior को शुभकामनाएं देने के लिए देश निकल पड़ता है, तब उस चेतना की अनुभूति होती है। दुनिया कोरोना के काल खंड में वैक्सिन लेना या न लेना, वैक्सिन काम की है या नहीं है, उस उलझन में जी रही थी। उस समय मेरे देश के गांव गरीब भी दो सौ करोड़ डोज दुनिया को चौंका देने वाला काम करके दिखा देते हैं। ये ही चेतना है, ये ही सामर्थ्य है इस सामर्थ्य ने आज देश को नई ताकत दी है।

इस एक महत्वपूर्ण सामर्थ्य को मैं देख रहा हूं जैसे aspirational society, जैसे पुनर्जागरण वैसे ही आजादी के इतने दशकों के बाद पूरे विश्व का भारत की तरफ देखने का नजरिया बदल चुका है। विश्व भारत की तरफ गर्व से देख रहा है, अपेक्षा से देख रहा है। समस्याओं का समाधान भारत की धरती पर दुनिया खोजने लगी है दोस्तों। विश्व का यह बदलाव, विश्व की सोच में यह परिवर्तन 75 साल की हमारी अनुभव यात्रा का परिणाम है।

हम जिस प्रकार से संकल्प् को लेकर चल पड़े है दुनिया इसे देख रही है, और आखिरकार विश्व भी उम्मीदें लेकर जी रहा है। उम्मीदें पूरी करने का सामर्थ्य, कहां पड़ा है वो उसे दिखने लगा है। मैं इसे स्त्री शक्ति के रूप में देखता हूं। तीन सामर्थ्य के रूप में देखता हूं, और यह त्रि–शक्ति है aspiration की, पुनर्जागणरण की और विश्व के उम्मीदों की और इसे पूरा करने के लिए हम जानते हैं दोस्तों आज दुनिया में एक विश्वास जगने में मेरे देशवासियों की बहुत बड़ी भूमिका है। 130 करोड़ देशवासियों ने कई दशकों के अनुभव के बाद स्थिर सरकार का महत्वर क्या होता है, राजनीतिक स्थिरता का महत्व क्या होता है, political stability दुनिया में किस प्रकार की ताकत दिखा सकती है।

नीतियों में कैसा सामर्थ्य होता है, उन नीतियों पर विश्व का कैसे भरोसा बनता है। यह भारत ने दिखाया है और दुनिया भी इसे समझ रही है और अब जब राजनीतिक स्थिरता हो, नीतियों में

गतिशीलता हो, निर्णयों में तेजी हो, सर्वव्या पकता हो, सर्वसमाज विश्वस्ता हो, तो विकास के लिए हर कोई भागीदार बनता है। हमने सबका साथ, सबका विकास का मंत्र लेकर हम चलें थे, लेकिन देखते ही देखते देशवासियों ने सबका विश्वास और सबके प्रयास से उसमें और रंग भर दिए हैं और इसलिए हमने देखा है हमारी सामूहिक शक्ति को, हमारे सामूहिक सामर्थ्य को हमने देखा है। आजादी का अमृत महोत्सव जिस प्रकार से मनाया गया, जिस प्रकार से आज हर जिले में 75 अमृत सरोवर बनाने का अभियान चल रहा है, गांव–गांव के लोग जुड़ रहे हैं, कार्य सेवा कर रहे हैं। अपने प्रयत्नों से अपने गांव में जल संरक्षण के लिए बड़ा अभियान चला रहे हैं और इसलिए भाईयों–बहनों, चाहे स्वतच्छता का अभियान हो, चाहे गरीबों के कल्याण का काम हो, देश आज पूरी शक्ति से आगे बढ़ रहा है।

लेकिन भाईयों–बहनों हम लोग आजादी के अमृतकाल में हमारी 75 साल की यात्रा को उसका गौरवगान ही करते रहेंगे, अपनी ही पीठ थपथपाते रहेंगे, तो हमारे सपने कहीं दूर चले जाएंगे। और इसलिए 75 साल का कालखंड कितना ही शानदार रहा हो, कितने ही संकटों वाला रहा हो, कितने ही चुनौतियों वाला रहा हो, कितने ही सपने अधूरे दिखते हो उसके बावजूद भी आज जब हम अमृतकाल में प्रवेश कर रहे हैं अगले 25 वर्ष हमारे देश के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है और इसलिए जब मैं आज मेरे सामने लाल किले पर से 130 करोड़ देशवासियों के सामर्थ्य का स्मरण करता हूं, उनके सपनों को देखता हूं, उनके संकल्प की अनुभूति करता हूं तो साथियों मुझे लगता है आने वाले 25 साल के लिए हमें उन पंचप्रण पर अपनी शक्ति को केंद्रित करनी होगा। अपने संकल्पों को केंद्रित करना होगा। अपने सामर्थ्य को केंद्रित करना होगा और हमें उन पंचप्रण को लेकर के, 2047 जब आजादी के 100 साल होंगे आजादी के दिवानों के सारे सपने पूरे करने का जिम्मा उठा करके चलना होगा।

जब मैं पंचप्रण की बात करता हूं तो पहला प्रण अब देश बड़े संकल्प लेकर ही चलेगा। बहुत बड़े संकल्प लेकर के चलना होगा और वो बड़ा संकल्प है विकसित भारत, अब उससे कुछ कम नहीं होना चाहिए। बड़ा संकल्प–दूसरा प्रण है किसी भी कोने में हमारे मन के भीतर, हमारी आदतों के भीतर गुलामी का एक भी अंश अगर अभी भी कोई है तो उसको किसी भी हालत में बचने नहीं देना है। अब शत–प्रतिशत, शत–प्रतिशत सैंकड़ों साल की गुलामी ने जहां हमें जकड़ कर रखा है, हमें हमारे मनोभाव को बांध करके रखा हुआ है, हमारी सोच में विकृतियां पैदा करके रखी हैं। हमें गुलामी की छोटी से छोटी चीज भी कहीं नजर आती है, हमारे भीतर नजर आती है, हमारे आस–पास नजर आती है हमें उससे मुक्ति पानी ही होगी। ये हमारी दूसरी प्रण शक्ति है। तीसरी प्रण शक्ति, हमें हमारी विरासत पर गर्व होना चाहिए, हमारी विरासत के प्रति क्योंकि यही विरासत है जिसने कभी भारत को स्वंर्णिम काल दिया था और यही विरासत है जो समयानुकूल परिवर्तन करने आदत रखती है। यही विरासत है जो काल–बाह्य छोड़ती रही है। नित्य नूतन स्वीकारती रही है और इसलिए इस विरासत के प्रति हमें गर्व होना चाहिए। चौथा प्रण वो भी उतना ही महत्वरपूर्ण है और वो है एकता और एकजुटता। 130 करोड़ देशवासियों में एकता, न कोई अपना न कोई पराया, एकता की ताकत, 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' के सपनों के लिए हमारा चौथा प्रण है और पांचवां प्रण, पांचवां प्रण है नागरिकों का कर्तव्य, नागरिकों का कर्तव्य, जिसमें प्रधानमंत्री भी बाहर नहीं होता, मुख्यमंत्री भी बाहर नहीं होता वो भी नागरिक है। नागरिकों का कर्तव्य। ये हमारे आने वाले 25 साल के सपनों को पूरा करने के लिए एक बहुत बड़ी प्रण शक्ति है।

जब सपने बड़े होते हैं, जब संकल्प बड़े होते हैं तो पुरुषार्थ भी बहुत बड़ा होता है। शक्ति भी बहुत बड़ा मात्रा में जुड़ जाती है। अब कोई कल्पना कर सकता है कि देश उस 40–42 के काल खंड को याद कीजिए, देश उठ खड़ा हुआ था। किसी ने हाथ में झाड़ू लिया था, किसी ने तकली ली थी, किसी ने सत्याग्रह का मार्ग चुना था, किसी ने संघर्ष का मार्ग चुना था, किसी ने काल क्रांति की वीरता का रास्ताज चुना था। लेकिन संकल्प् बड़ा था 'आजादी' और ताकत देखिए बड़ा संकल्पा था तो आजादी लेकर रहे। हम आजाद हो गये। अगर संकल्प। छोटा होता, सीमित होता तो शायद आज भी संघर्ष करने के दिन चालू रहते, लेकिन संकल्प बड़ा था, तो हमने हासिल भी किया।

अब आज जब अमृत काल की पहली प्रभात है, तो हमें इन पच्चीस साल में विकसित भारत बना कर रहना है। अपनी आंखों के सामने और 20–22–25 साल के मेरे नौजवान, मेरे देश के मेरे सामने है, मेरे देश के नौजवानों जब देश आजादी के 100 साल मनाएगा। तब आप 50–55 के हुए होंगे, मतलब आपके जीवन का ये स्वोर्णिम काल, आपकी उम्र के ये 25–30 साल भारत के सपनों को पूरा करने का काल है। आप संकल्प ले करके मेरे साथ चल पड़िए साथियों, तिंरगे झंडे की शपथ ले करके चल पड़िए, हम सब पूरी ताकत से लग जाएं। महासंकल्प, मेरा देश विकसित देश होगा, developed country होगा, विकास के हरेक पैरामीटर में हम मानवकेंद्री व्यवस्था को विकसित करेंगे, हमारे केंद्र में मानव होगा, हमारे केंद्र के मानव की आशा–आकांक्षाएं होंगी। हम जानते हैं, भारत जब बड़े संकल्प करता है तो करके भी दिखाता है।

जब मैंने यहां स्वंच्छता की बात कही थी मेरे पहले भाषण में, देश

चल पड़ा है, जिससे जहां हो सका, स्वच्छता की ओर आगे बढ़ा और गंदगी के प्रति नफरत एक स्वलभाव बनता गया है। यही तो देश है, जिसने इसको करके दिखाया है और कर भी रहा है, आगे भी कर रहा है। यही तो देश है, जिसने वैक्सीनेशन, दुनिया दुविधा में थी, 200 करोड़ का लक्ष्य पार कर लिया है, समय–सीमा में कर लिया है, पुराने सारे रिकॉर्ड तोड़ करके कर लिया है, ये देश कर सकता है। हमने तय किया था देश को खाड़ी के तेल पर हम गुजारा करते हैं, झाड़ी के तेल की ओर कैसे बढ़ें, 10 प्रतिशत इथेनॉल ब्लेडिंग का सपना बड़ा लगता था। पुराना इतिहास बताता था संभव नहीं है, लेकिन समय से पहले 10 प्रतिशत इथेनॉल ब्लेडिंग करके देश ने इस सपने को पूरा कर दिया है।

ढाई करोड़ लोगों को इतने कम समय में बिजली कनेक्शन पहुंचाना, छोटा काम नहीं था, देश ने करके दिखाया। लाखों परिवारों के घर में 'नल से जल' पहुंचाने का काम आज देश तेज गति से कर रहा है। खुले में शौच से मुक्ति, भारत के अंदर आज संभव हो पाया है।

अनुभव कहता है कि एक बार हम सब संकल्पा ले करके चल पड़ें तो हम निर्धारित लक्ष्यों को पार कर सकते हैं । Renewable energy का लक्ष्य हो, देश में नए मेडिकल कॉलेज बनाने का इरादा हो, डॉक्टरों की तैयारी करवानी हो, हर क्षेत्र में पहले से गति बहुत बढ़ी है और इसलिए मैं कहता हूं अब आने वाले 25 साल बड़े संकल्प के हों, यही हमारा प्रण, यही हमारा प्रण भी होना चाहिए।

दूसरी बात मैंने कही है, उस प्रण शक्ति की मैंने चर्चा की है कि गुलामी की मानसिकता, देश की सोच सोचिए भाइयो, कब तक दुनिया हमें सर्टिफिकेट बांटती रहेगी? कब तक दुनिया के सर्टिफिकेट पर हम गुजारा करेंगे? क्या हम अपने मानक नहीं बनाएंगे? क्या 130 करोड़ का देश अपने मानकों को पार करने के लिए पुरुषार्थ नहीं कर सकता है। हमें किसी भी हालत में औरों के जैसा दिखने की कोशिश करने की जरूरत नहीं है। हम जैसे हैं वैसे, लेकिन सामर्थ के साथ खड़े होंगे, ये हमारा मिजाज होना चाहिए। हमें गुलामी से मुक्ति चाहिए। हमारे मन के भीतर दूर–दूर सात समंदर के नीचे भी गुलामी का तत्व नहीं बचे रहना चाहिए साथियों और मैं आशा से देखता हूं, जिस प्रकार से नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति बनी है, जिस मंथन के साथ बनी है, कोटि–कोटि लोगों के विचार–प्रवाह को संकलित करते हुए बनी है और भारत की धरती की जमीन से जुड़ी हुई शिक्षा नीति बनी है, रसकस हमारी धरती के मिले हैं। हमने जो कौशल्य पर बल दिया है, ये एक ऐसा सामर्थ्यन है, जो हमें गुलामी से मुक्ति की ताकत देगा।

हमने देखा है कभी–कभी तो हमारा टेलेंट भाषा के बंधनों में बंध जाता है, ये गुलामी की मानसिकता का परिणाम है। हमें हमारे देश की हर भाषा पर गर्व होना चाहिए। हमें भाषा आती हो या न आती हो, लेकिन मेरे देश की भाषा है, मेरे पूर्वजों ने दुनिया को दी हुई ये भाषा है, हमें गर्व होना चाहिए।

आज डिजिटल इंडिया का रूप हम देख रहे हैं। स्टार्ट अप देख रहे हैं। कौन लोग हैं? ये वो टैलेंट है जो टीयर–2, टीयर–3 सीटी में किसी गांव गरीब के परिवार में बसे हुए लोग हैं। ये हमारे नौजवान हैं जो आज नई–नई खोज के साथ दुनिया के सामने आ रहे हैं। गुलामी की मानसिकता हमें उसे तिलांजलि देनी पड़ेगी। अपने सामर्थ्य पर भरोसा करने होगा।

दूसरी एक बात जो मैंने कही है, तीसरी मेरी प्रणशक्ति की बात है वो है हमारी विरासत पर। हमें गर्व होना चाहिए। जब हम अपनी धरती से जुड़ेंगे, जब हम अपनी धरती से जुड़ेंगे, तभी तो ऊंचा उड़ेंगे, और जब हम ऊंचा उड़ेंगे तो हम विश्व को भी समाधान दे पाएंगे। हमने देखा है जब हम अपनी चीजों पर गर्व करते हैं। आज दुनिया holistic health care की चर्चा कर रही है लेकिन जब holistic health care की चर्चा करती है तो उसकी नजर भारत के योग पर जाती है, भारत के आयुर्वेद पर जाती है, भारत के holistic lifestyle पर जाती है। ये हमारी विरासत है जो हम दुनिया का दे रहे हैं। दुनिया आज उससे प्रभावित हो रही है। अब हमारी ताकत देखिए। हम वो लोग हैं जो प्रकृति के साथ जीना जानते हैं। प्रकृति को प्रेम करना जानते हैं। आज विश्व पर्यावरण की जो समस्या से जूझ रहा है। हमारे पास वो विरासत है, ग्लोबल वार्मिंग की समस्याओं के समाधान का रास्ता हम लोगों के पास है। हमारे पूर्वजों ने दिया हुआ है।

जब हम lifestyle की बात करते हैं, environment friendly lifestyle की बात करते हैं, हम life mission की बात करते हैं तो दुनिया का ध्यान आकर्षित करते हैं। हमारे पास ये सामर्थ्य है। हमारा बड़ा धान मोटा धान मिलेट, हमारे यहां तो घर–घर की चीज रही है। ये हमारी विरासत है, हमारे छोटे किसानों के परिश्रम से छोटी–छोटी जमीन के टुकड़ों में फलने फुलने वाली हमारी धान। आज दुनिया अंतराष्ट्रीय स्तर पर millet year मनाने के लिए आगे बढ़ रही है। मतलब हमारी विरासत को आज दुनिया, हम उस पर गर्व करना सीखें। हमारे पास दुनिया को बहुत कुछ देना है। हमारे family values विश्व के सामाजिक तनाव की जब चर्चा हो रही है। व्यक्तिगत तनाव की चर्चा होती है, तो लोगों को योग दिखता है। सामुहिक तनाव की बात होती है तब भारत की पारिवारिक व्यवस्था दिखती है। संयुक्त परिवार की एक पूंजी सदियों से

हमारी माताओं–बहनों के त्याग बलिदान के कारण परिवार नाम की जो व्यवस्था विकसित हुई ये हमारी विरासत है। इस विरासत पर हम गर्व कैसे करें। हम तो वो लोग हैं जो जीव में भी शिव देखते हैं। हम वो लोग हैं जो नर में नारायण देखते हैं। हम वो लोग हैं जो नारी का नारायणी कहते हैं। हम वो लोग हैं जो पौधे में परमात्मा देखते हैं। हम वो लोग हैं जो नदी को मां मानते हैं। हम वो लोग हैं जो हर कंकर में शंकर देखते हैं। ये हमारा सामर्थ्य है हर नदी में मां का रूप देखते हैं। पर्यावरण की इतनी व्यापकता विशालता ये हमारा गौरव जब विश्व के सामने खुद गर्व करेंगे तो दुनिया करेगी।

हम वो लोग हैं जिसने दुनिया को वसुधैव कुटुम्बकम् का मंत्र दिया है। हम वो लोग हैं जो दुनिया को कहते हैं 'एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्ति।' आज जो holier than जीवन' का संकट जो चल रहा है, तुझसे बड़ा मैं हूँ, ये जो तनाव का कारण बना हुआ है दुनिया को एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्ति का ज्ञान देने वाली विरासत हमारे पास है। जो कहते हैं सत्य एक है जानकार लोग उसको अलग–अलग तरीके से कहते हैं। यह गौरव हमारा है। हम लोग हैं, जो कहते हैं यत् पिण्डे तत् ब्रह्माण्डे, कितनी बड़ी सोच है, जो ब्रह्माण्ड में है वो हर जीव मात्र में है। यत् पिण्डे तत् ब्रह्माण्डे, यह कहने वाले हम लोग हैं। हम वो लोग हैं जिसने दुनिया का कल्याण देखा है, हम जग कल्याण से जन कल्याण के राही रहे हैं। जन कल्याण से जग कल्याण की राह पर चलने वाले हम लोग जब दुनिया की कामना करते हैं, तब कहते हैं– सर्वे भवन्तु सुखिनः। सर्वे सन्तु निरामयाः। सबके सुख की बात सबके आरोग्य की बात करना यह हमारी विरासत है। और इसलिए हम बड़ी शान के साथ हमारी इस विरासत का गर्व करना सीखे, यह प्रण शक्ति है हमारी, जो हमें 25 साल के सपने पूरा करने के लिए जरुरी है।

एक और महत्वपूर्ण विषय है एकता, एकजुटता। इतने बड़े देश को उसकी विविधता को हमें सेलिब्रेट करना है, इतने पंथ और परंपराएं यह हमारी आन–बान–शान है। कोई नीचा नहीं, कोई ऊंचा नहीं है, सब बराबर हैं। कोई मेरा नहीं, कोई पराया नहीं सब अपने हैं। यह भाव एकता के लिए बहुत जरुरी है। घर में भी एकता की नींव तभी रखी जाती है जब बेटा–बेटी एकसमान हो। अगर बेटा–बेटी एक समान नहीं होंगे तो एकता के मंत्र नहीं गुथ सकते हैं। जेंडर इक्वैलिटी हमारी एकता में पहली शर्त है। जब हम एकता की बात करते हैं, अगर हमारे यहां एक ही पैरामीटर हो एक ही मानदंड हो, जिस मानदंड को हम कहे इंडिया फर्स्ट मैं जो कुछ भी कर रहा हूँ, जो भी सोच रहा हूँ, जो भी बोल रहा हूँ इंडिया फर्स्ट के अनुकुल है। एकता का रास्ता खुल जाएगा दोस्त। हमें एकता से बांधने का वो मंत्र है, हमें इसको पकड़ना है। मुझे पूरा विश्वास है, कि हम समाज के अंदर ऊंच–नीच के भेदभावों से मेरे–तेरे के भेदभावों से हम सबकी पुजारी बनें। श्रमेव जयते कहते हैं हम श्रमिक का सम्मान यह हमारा स्वभाव होना चाहिए।

मैं लाल किले से मेरी एक पीड़ा और कहना चाहता हूँ, यह दर्द मैं कहे बिना नहीं रह सकता। मैं जानता हूँ कि शायद यह लाल किले का विषय नहीं हो सकता। लेकिन मेरे भीतर का दर्द मैं कहाँ कहूँगा। देशवासियों के सामने नहीं कहूँगा तो कहाँ कहूंगा और वो है किसी न किसी कारण से हमारे अंदर एक ऐसी विकृति आयी है, हमारी बोलचाल में, हमारे व्यवहार में, हमारे कुछ शब्दों में हम नारी का अपमान करते हैं। क्या हम स्वभाव से, संस्कार से, रोजमर्रा की जिंदगी में नारी को अपमानित करने वाली हर बात से मुक्ति का संकल्प ले सकते हैं। नारी का गौरव राष्ट्र के सपने पूरे करने में बहुत बड़ी पूंजी बनने वाला है। यह सामर्थ्य मैं देख रहा हूँ और इसलिए मैं इस बात का आग्रही हूँ।

मेरे प्यारे देशवासियों,

मैं पांचवीं प्रणशक्ति की बात करता हूँ। और वो पांचवीं प्रणशक्ति है–नागरिक का कर्तव्य। दुनिया में जिन–जिन देशों ने प्रगति की है। जिन–जिन देशों ने कुछ achieve किया है, व्यक्तिगत जीवन में भी जिसने achieve किया है, कुछ बातें उभर करके सामने आती हैं। एक अनुशासित जीवन, दूसरा कर्तव्य के प्रति समर्पण। व्यक्ति के जीवन की सफलता हो, समाज की हो, परिवार की हो, राष्ट्र की हो। यह मूलभूत मार्ग है, यह मूलभूत प्रणशक्ति है।

दुनिया में जिन–जिन देशों ने प्रगति की है, जिन–जिन देशों ने कुछ achieve किया है। व्यक्तिगत जीवन में भी जिसने achieve किया है। कुछ बातें उभर करके सामने आती है। एक अनुशासित जीवन, दूसरा कर्तव्य के प्रति समपर्ण। व्यक्ति के जीवन की सफलता हो, समाज की हो, परिवार की हो, राष्ट्र की हो, यह मूलभूत मार्ग है। यह मूलभूत प्रणशक्ति है और इसलिए हमें कर्तव्य पर बल देना ही होगा। यह शासन का काम है कि बिजली 24 घंटे पहुंचाने के लिए प्रयास करे, लेकिन यह नागरिक का कर्तव्यं है कि जितनी ज्यादा यूनिट बिजली बचा सकते है बचाएं। हर खेत में पानी पहुंचाना सरकार की जिम्मेदारी है, सरकार का प्रयास है, लेकिन per drop more crop पानी बचाते हुए आगे बढ़ना मेरे हर खेत से आवाज़ उठनी चाहिए। केमिकल मुक्त खेती, ऑर्गेनिक फार्मिंग, प्राकृतिक खेती यह हमारा कर्तव्य है।

साथियों, चाहे पुलिस हो, या पीपुल हो, शासक हो या प्रशासक हो, यह नागरिक कर्तव्या से कोई अछूता नहीं हो सकता। हर कोई अगर नागरिक के कर्तव्यो को निभाएगा तो मुझे विश्वास है कि हम इच्छित लक्ष्य को प्राप्ती करने में समय से पहले सिद्धि प्राप्त कर सकते हैं।

आज महर्षि अरबिंदों की जन्म जयंती भी है। मैं उस महापुरूष के

चरणों में नमन करता हूं। लेकिन हमें उस महापुरूष को याद करना होगा जिन्होंने कहा था स्वदेशी से स्वराज, स्वराज से सुराज। यह उनका मंत्र है हम सबको सोचना होगा कि हम कब तक दुनिया के और लोगों पर निर्भर रहेंगे। क्या हमारे देश को अन्न की आवश्यकता हो, हम out source कर सकते हैं क्या? जब देश ने तय कर लिया कि हमारा पेट हम खुद भरेंगे, देश ने करके दिखाया या नहीं दिखाया, एक बार संकल्प् लेते हैं तो होता है। और इसलिए आत्म निर्भर भारत यह हर नागरिक का, हर सरकार का, समाज की हर ईकाई का यह दायित्व बन जाता है। यह आत्म निर्भर भारत यह सरकारी एजेंडा, सरकारी कार्यक्रम नहीं है। यह समाज का जन आंदोलन है, जिसे हमें आगे बढ़ाना है।

मेरे साथियों, आज जब हमने यह बात सुनी, आजादी के 75 साल के बाद जिस आवाज़ को सुनने के लिए हमारे कान तरस रहे थे, 75 साल के बाद वो आवाज़ सुनाई दी है। 75 साल के बाद लाल किले पर से तिरंगे को सलामी देने का काम पहली बार Made In India तोप ने किया है। कौन हिन्दुस्तानी होगा, जिसको यह बात, यह आवाज़ उसे नई प्रेरणा, ताकत नहीं देगी और इसलिए मेरे प्यारे भाई – बहनों में आज मेरे देश के सेना के जवानों का हृदय से अभिनंदन करना चाहता हूं। मेरी आत्म निर्भर की बात को संगठित स्वरूप में, साहस के स्वरूप में मेरी सेना के जवानों ने सेना नायकों ने जिस जिम्मेरदारी के साथ कंधे पर उठाया है। मैं उनको जितनी salute करूं, उतनी कम है दोस्तों। उनको आज मैं सलाम करता हूं। क्योंकि सेना का जवान मौत को मुट्ठी में ले करके चलता है। मौत और जिंदगी के बीच में कोई फासला ही नहीं होता है, और तब बीच में वो डट करके खड़ा होता है। और वो मेरे सेना का जवान तय करे कि हम तीन सौ ऐसी चीजें अब list करते हैं जो हम विदेश से नहीं लाएंगे। हमारे देश का यह संकल्प छोटा नहीं है।

मुझे इस संकल्प में भारत के 'आत्म निर्भर' भारत के उज्जवल भविष्यं के वो बीज मैं देख रहा हूं जो इस सपनों को वट वृक्ष में परिवर्तित करने वाले हैं। Salute! Salute! मेरे सेना के अधिकारियों को Salute- मैं मेरे छोटे छोटे बालकों को 5 साल 7 साल की आयु के बालक, उनको भी Salute करना चाहता हूं। उनको भी सलाम करना चाहता हूं। जब देश के सामने चेतना जगी, मैंने सैंकड़ों परिवारों से सुना है, 5–5, 7 साल के बच्चे घर में कह रहें हैं कि अब हम विदेशी खिलौने से नहीं खेलेंगे। 5 साल का बच्चां घर में विदेशी खिलौने से नहीं खेलेंगे, ये जब संकल्प करता है ना तब आत्म निर्भर भारत उसकी रगों में दौड़ता है। आप देखिए पीएलआई स्कीम, एक लाख करोड़ रुपया, दुनिया के लोग हिन्दुस्तान में अपना नसीब आजमाने आ रहे हैं। टेक्नोलॉजी लेकर के आ रहे हैं। रोजगार के नये अवसर बना रहे हैं। भारत मैन्यूफैक्चिरिंग हब बनता जा रहा है। आत्मनिर्भर भारत कि बुनियाद बना रहा है। आज electronic goods manufacturing हो, मोबाइल फोन का manufacturing हो, आज देश बहुत तेजी से प्रगति कर रहा है। जब हमारा ब्रह्मोस दुनिया में जाता है, कौन हिन्दुस्तानी होगा जिसका मन आसमान को न छूता होगा दोस्तों। आज हमारी मेट्रो coach मे, हमारी वंदे भारत ट्रेन विश्व के लिए आकर्षण बन रहा है।

हमें आत्म निर्भर बनना है, हमारे एनर्जी सेक्टर में। हम कब तक एनर्जी के सेक्टर में किसी और पर dependent रहेंगे और हमें सोलार का क्षेत्र हो, विंड एनर्जी का क्षेत्र हो, रिन्यूएबल के और भी जो रास्ते हों, मिशन हाइड्रोजन हो, बायो फ्यूल की कोशिश हो, electric vehicle पर जाने की बात हो, हमें आत्म निर्भर बनकर के इन व्यवस्थाओं को आगे बढ़ाना होगा।

आज प्राकृतिक खेती भी आत्म निर्भर का एक मार्ग है। फर्टीलाइज़र से जितनी ज्यादा मुक्ति, आज देश में नेनो फर्टीलाइज़र के कारखाने एक नई आशा लेकर के आए हैं। लेकिन प्राकृतिक खेती, केमिकल फ्री खेती आत्मकनिर्भर को ताकत दे सकती है। आज देश में रोजगार के क्षेत्र में ग्रीन जॉब के नए–नए क्षेत्र बहुत तेजी से खुल रहे हैं। भारत ने नीतियों के द्वारा 'स्पेस' को खोल दिया है। ड्रोन की बहुत दुनिया में सबसे प्रगतिशील पॉलिसी लेकर के आए हैं। हमने देश के नौजवानों के लिए नए द्वार खोल दिए हैं।

मैं प्राइवेट सेक्टर को भी आह्वान करता हूं आइए हमें विश्व में छा जाना है। आत्मनिर्भर भारत का ये भी सपना है कि दुनिया को भी जो आवश्यकताए हैं उसको पूरा करने में भारत पीछे नहीं रहेगा। हमारे लघू उद्योग हो, सूक्ष्म उद्योग हो, कुटीर उद्योग हो, 'जीरो डिफेक्टं जीरो इफेक्ट्' हमें करके दुनिया में जाना होगा। हमें स्वदेशी पर गर्व करना होगा।

हम बार–बार लाल बहादुर शास्त्री जी को याद करते हैं, जय जवान–जय किसान का उनका मंत्र आज भी देश के लिए प्रेरणा है। बाद में अटल बिहारी वाजपेयी जी ने जय विज्ञान कह करके उसमें एक कड़ी जोड़ दी थी और देश ने उसको प्राथमिकता दी थी। लेकिन अब अमृतकाल के लिए एक और अनिवार्यता है और वो है जय अनुसंधान। जय जवान–जय किसान–जय विज्ञान–जय अनुसंधान– इनोवेशन और मुझे मेरे देश की युवा पीढ़ी पर भरोसा है। इनोवेशन की ताकत देखिए, आज हमारा यूपीआई–भीम, हमारा डिजिटल पेमेंट, फिनटेक की दुनिया में हमारा स्थाकन, आज विश्व में रियल टाइम 40 पर्सेंट अगर डिजिटली फाइनेशियल का ट्रांजेक्शन होता है तो मेरे देश में हो

रहा है, हिन्दुस्तान ने ये करके दिखाया है।

अब हम 5जी के दौर की ओर कदम रख रहे हैं। बहुत दूर इंतजार नहीं करना होगा, हम कदम मिलाने वाले हैं। हम ऑप्टिकल फाइबर गांव–गांव में पहुंचा रहे हैं। डिजिटल इंडिया का सपना गांव से गुजरेगा, ये मुझे पूरी जानकारी है। आज मुझे खुशी है हिन्दुस्तांन के चार लाख कॉमन सर्विस सेंटर्स गांवों में विकसित हो रहे हैं। गांव के नौजवान बेटे–बेटियां कॉमन सर्विस सेंटर चला रहे हैं। देश गर्व कर सकता है कि गांव के क्षेत्र में चार लाख Digital Entrepreneur का तैयार होना और सारी सेवाएं लोग गांव के लोग उनके यहां लेने के लिए आदी बन जाएं, ये अपने–आप में टेक्नोलॉजी हब बनने की भारत की ताकत है।

मेरे प्याहरे देशवासियों,

ये जो डिजिटल इंडिया का मूवमेंट है, जो सेमीकंडक्टर की ओर हम कदम बढ़ा रहे हैं, 5जी की ओर कदम बढ़ा रहे हैं, ऑप्टिकल फाइबर का नेटवर्क बिछा रहे हैं, ये सिर्फ आधुनिकता की पहचान है, ऐसा नहीं है। तीन बड़ी ताकतें इसके अंदर समाहित हैं। शिक्षा में आमूल–चूल क्रांति–ये डिजिटल माध्यम से आने वाली है। स्वास्थ्य सेवाओं में आमूल–चूल क्रांति डिजिटल से आने वाली है। कृषि जीवन में भी बहुत बड़ा बदलाव डिजिटल से आने वाला है। एक नया विश्व तैयार हो रहा है। भारत उसे बढ़ाने के लिए और मैं साफ देख रहा हूं दोस्तों ये Decade, मानव जाति के लिए tecahade का समय है, टेक्नोलॉजी का Decade है। भारत के लिए तो ये tecahade, जिसका मन टेक्नोकलॉजी से जुड़ा हुआ है। आईटी की दुनिया में भारत ने अपना एक लोहा मनवा लिया है, ये tecahade का सामर्थ्य भारत के पास है।

शिक्षा में आमूल-चूल क्रांति-ये डिजिटल माध्यम से आने वाली है। स्वास्थ्य सेवाओं में आमूल-चूल क्रांति डिजिटल से आने वाली है। कृषि जीवन में भी बहुत बड़ा बदलाव डिजिटल से आने वाला है।

हमारा अटल इनोवेशन मिशन, हमारे incubation centre हमारे स्टार्टअप एक नया, पूरे क्षेत्र का विकास कर रहे हैं, युवा पीढ़ी के लिए नए अवसर ले करके आ रहे हैं। स्पेपस मिशन की बात हो, हमारे Deep Ocean Mission की बात हो, समंदर की गहराई में जाना हो या हमें आसमान को छूना हो, ये नए क्षेत्र हैं, जिसको ले करके हम आगे बढ़ रहे हैं।

हम इस बात को न भूलें और भारत ने सदियों से देखा हुआ है, जैसे देश में कुछ नमूना रूप कामों की जरूरत होती है, कुछ बड़ी–बड़ी ऊंचाइयों की जरूरत होती है, लेकिन साथ–साथ धरातल पर मजबूती बहुत आवश्योक होती है। भारत की आर्थिक विकास की संभावनाएं धरातल की मजबूती से जुड़ी हुई हैं। और इसलिए हमारे छोटे किसान–उनका सामर्थ्य , हमारे छोटे उद्यमी–उनका सामर्थ्य , हमारे लघु उद्योग, कुटीर उद्योग, सूक्ष्मे उद्योग, रेहड़ी–पटरी वाले लोग, घरों में काम करने वाले लोग, ऑटो रिक्शाट चलाने वाले लोग, बस सेवाएं देने वाले लोग, ये समाज का जो सबसे बड़ा तबका है, इसका सामर्थ्य,वान होना भारत के सामर्थ्य की गारंटी है और इसलिए हमारे आर्थिक विकास की ये जो मूलभूत जमीनी ताकत है, उस ताकत को सर्वाधिक बल देने की दिशा में हमारा प्रयास चल रहा है।

हमारे पास 75 साल का अनुभव है, हमने 75 साल में कई सिद्धियां भी प्राप्तन की हैं। हमने 75 साल के अनुभव में नए सपने भी संजोए हैं, नए संकल्प भी लिए हैं। लेकिन अमृत काल के लिए हमारे मानव संसाधन का आप्टिमम आउटकम कैसे हो? हमारी प्राकृतिक संपदा का आप्टिमम आउटकम कैसे हो? इस लक्ष्य को लेकर के हमें चलना है। और तब मैं पिछले कुछ सालों के अनुभव से कहना चाहता हूँ। आपने देखा होगा, आज अदालत के अंदर देखिए हमारी वकील के क्षेत्र में काम करने वाली हमारी नारीशक्ति किस ताकत के साथ नजर आ रही है। आप ग्रामीण क्षेत्र में जनप्रतिनिधि के रूप में देखिए। हमारी नारीशक्ति किस मिजाज से समर्पित भाव से अपनी गांवों की समस्याओं को सुलझाने में लगी हुई हैं। आज ज्ञान का क्षेत्र देख लीजिए, विज्ञान का क्षेत्र देख लीजिए, हमारे देश की नारीशक्ति सिरमौर नजर आ रही है।

हम जिम्मेदारियों को लेकर आगे बढ़ें। मैं आज भारत के संविधान के निर्माताओं का भी धन्यवाद करना चाहता हूं कि उन्होंने जो हमें मिकमतंस`जतनबजनतम दिया है, उसके स्पिरिट को बनाते हुए, उसकी भावनाओं का आदर करते हुए हम कंधे से कंधा मिलाकर के इस अमृतकाल में चलेंगे तो सपने साकार होकर के रहेंगे। कार्यक्रम भिन्न हो सकते हैं, कार्यशैली भिन्न हो सकती है लेकिन संकल्प भिन्न नहीं हो सकते, राष्ट्र के लिए सपने भिन्न नहीं हो सकते।

आइए हम एक ऐसे युग के अंदर आगे बढ़ें। मुझे याद है जब मैं गुजरात का मुख्यमंत्री था। केंद्र में हमारे विचार की सरकार नहीं थी, लेकिन मेरे गुजरात में हर जगह पर मैं एक ही मंत्र लेके के चलता था कि भारत के विकास के लिए गुजरात का विकास। भारत का विकास हम कहीं पर भी हों, हम सबके मन मस्तिष्क में रहना चाहिए। हमारे देश के कई राज्य हैं, जिन्होंने देश को आगे बढ़ाने में बहुत भूमिका अदा की है, नेतृत्व किया है, कई क्षेत्रों में उदाहरणीय काम किए हैं। ये हमारे मिकमतंसपेउ को ताकत देते हैं। लेकिन आज समय की मांग है कि हमें बववचमतंजपअम मिकमतंसपेउ के साथ–साथ बववचमतंजपअम बवउचमजपजपअम मिकमतंसपेउ की जरूरत है, हमें विकास की स्पर्धा की जरूरत है।

हर राज्या को लगना चाहिए कि वो राज्या आगे निकल गया। मैं इतनी मेहनहत करूंगा कि मैं आगे निकल जाऊंगा। उसने यह 10 अच्छेि काम किए हैं मैं 15 अच्छीे काम कर के दिखाऊंगा। उसने तीन साल में पूरा किया है मैं दो साल में कर के दिखाऊंगा। हमारे राज्योंह के बीच में हमारी`मतअपबम सरकार की सभी इकाइयों के बीच में वो स्पेर्धा का वातावरण चाहिए, जो हमें विकास की नई ऊंचाईयों पर ले जाने के लिए प्रयास करे।

मेरे प्यायरे देशवासियों,

इस 25 वर्ष का अमृतकाल के लिए जब हम चर्चा करते हैं, तब मैं जानता हूं चुनौतियां अनेक है, मर्यादाएं अनेक हैं, मुसीबतें भी हैं, बहुत कुछ है, हम इसको कम नहीं आंकते। रास्तेत खोजते हैं, लगातार कोशिश कर रहे हैं लेकिन दो विषयों को तो मैं यहां पर चर्चा करना चाहता हूं। चर्चा अनेक विषयों पर हो सकती है। लेकिन मैं अभी समय की सीमा के साथ दो विषयों पर चर्चा

करना चाहता हूं। और मैं मानता हूं हमारी इन सारी चुनौतियों के कारण, विकृतियों के कारण, बिमारियों के कारण इस 25 साल का अमृत काल उस पर शायद अगर हमने समय रहते नहीं चेते, समय रहते समाधान नहीं किए तो ये विकराल रूप ले सकते हैं। और इसलिए मैं सब की चर्चा न करते हुए दो पर जरूर चर्चा करना चाहता हूं। एक है भ्रष्टाचिार और दूसरा है भाई–भतीजावाद, परिवारवाद। भारत जैसे लोकतंत्र में जहां लोग गरीबी से जूझ रहे हैं जब ये देखते हैं, एक तरफ वो लोग हैं जिनके पास रहने के लिए जगह नहीं है। दूसरी ओर वो लोग हैं जिनको अपना चोरी किया हुआ माल रखने के लिए जगह नहीं है। यह स्थिति अच्छीर नहीं है दोस्तों। और इसणलिए हमें भ्रष्टावचार के खिलाफ पूरी ताकत से लड़ना है। पिछले आठ वर्षों में कपतमबज इमदमपिज जतंदेमित के द्वारा आधार, उवइपसम इन सारी आधुनिक व्यरवस्थीओं का उपयोग करते हुए दो लाख करोड़ रुपये जो गलत हाथों में जाते थे, उसको बचाकर के देश की भलाई के लिए लगाने में हम सफल हुए। जो लोग पिछली सरकारों में बैंकों को लूट–लूट कर के भाग गए, उनकी सम्पगत्यिां जब्त कर के वापिस लाने की कोशिश कर रहे हैं। कईयों को जेलों में जीने के लिए मजबूर कर के रखा हुआ है। हमारी कोशिश है जिन्होंनि देश को लूटा है उनको लौटना पड़े वो स्थिति हम पैदा करेंगे।

भाईयो और बहनों, अब भ्रष्टाचिार के खिलाफ मैं साफ देख रहा हूं कि हम एक निर्णायक कालखंड में कदम रख रहे हैं। बड़े–बड़े भी बच नहीं पाएंगे। इस मिजाज के साथ भ्रष्टोाचार के खिलाफ एक निर्णायक कालखंड में अब हिन्दुदस्ताशन कदम रख रहा है। और मैं लाल किले की प्राचीर से बड़ी जिम्मेवारी के साथ कह रहा हूं। और इसलिए, भाईयों–बहनों भ्रष्टाृचार दीमक की तरह देश को खोखला कर रहा है। मुझे इसके खिलाफ लड़ाई लड़नी है, लड़ाई को तेज करना है, निर्णायक मोड़ पर इसे लेकर के ही जाना है। तब मेरे 130 करोड़ देशवासी, आप मुझे आर्शिवाद दीजिए, आप मेरा साथ दीजिए, मैं आज आप से साथ मांगने आया हूं, आपका सहयोग मांगने आया हूं ताकि मैं इस लड़ाई को लड़ पाऊं। इस लड़ाई को देश जीत पाए और समान्यस नागरिक की जिंदगी भ्रष्टाशचार ने तबाह करके रखी हुई है। मैं मेरे इन समान्य् नागरिक की जिंदगी को फिर से आन, बान, शान के लिए जीने के लिए रास्तां बनाना चाहता हूं। और इसलिए, मेरे प्या रे दशवासियों यह चिंता का विषय है कि आज देश में भ्रष्टांचार के प्रति नफरत तो दिखती है, व्याक्त भी होती है लेकिन कभी–कभी भ्रष्टाहचारियों के प्रति उदारता बरती जाती है, किसी भी देश में यह शोभा नहीं देगा।

और कई लोग तो इतनी बेशर्मी तक चले जाते हैं कि कोर्ट में सजा हो चुकी हो, भ्रष्टांचारी सिद्ध हो चुका हो, जेल जाना तय हो चुका हो, जेल गुजार रहे हो, उसके बावजूद भी उनका महिमामंडन करने में लगे रहते हैं, उनकी शान–ओ–शौकत में लगे रहते हैं, उनकी प्रतिष्ठास बनाने में लगे रहते हैं। अगर जब तक समाज में गंदगी के प्रति नफरत नहीं होती है, स्चोछता की चेतना जगती नहीं है। जब तक भ्रष्टााचार और भ्रष्टीचारी के प्रति नफरत का भाव पैदा नहीं होता है, सामाजिक रूप से उसको नीचा देखने के लिए मजबूर नहीं करते, तब तक यह मानसिकता खत्म होने वाली नहीं है। और इसलिए भ्रष्टााचार के प्रति भी और भ्रष्टातचारियों के प्रति भी हमें बहुत जागरूक होने की जरूरत है।

मेरे देश के नौजवानों मैं आपके उज्ज्वल भविष्यत के लिए, आपके सपनों के लिए मैं भाई–भतीजावाद के खिलाफ लड़ाई में आपका साथ चाहता हूं। परिवारवादी राजनीति के खिलाफ लड़ाई में मैं आपका साथ चाहता हूं। यह संवैधानिक जिम्मेशदारी मानता हूं मैं। यह लोकतंत्र की जिम्मेयदारी मानता हूं मैं। यह लालकिले के प्राचीर से कही गई बात की ताकत मैं मानता हूं। और इसलिए मैं आज आपसे यह अवसर चाहता हूं। हमने देखा पिछले दिनो खेलों में, ऐसा तो नहीं है कि देश के पास पहले प्रतिभाएं नहीं रहीं होंगी, ऐसा तो नहीं है कि खेल–कूद की दुनिया में हिन्दुशस्तासन के नौजवान हमारे बेटे–बेटियां कुछ कर नहीं रहे। लेकिन`मसमबजपवद भाई–भतीजेवाद के चैनल से गुजरते थे। और उसके कारण वो खेल के मैदान तक उस देश तक तो पहुंच जाते थे, जीत–हार से उन्हेंल लेना–देना नहीं था। लेकिन जब जतंदेचंतमदबल आई योग्येता के आधार पर खिलाड़ियों का चयन होने लगा पूर्ण पारदर्शिता से खेल के मैदान में सामर्थ्यआ का सम्माजन होने लगा। आज देखिए दुनिया में खेल के मैदान में भारत का तिरंगा फहरता है। भारत का राष्ट्र्गान गाया जाता है।

परिवारवाद से मुक्ति होती है, भा भतीजावाद से मुक्ति होती है तो यह नतीजे आते हैं।

गर्व होता है और परिवारवाद से मुक्ति होती है, भाई भतीजावाद से मुक्ति होती है तो यह नतीजे आते हैं। मेरे प्योरे देशवासियों यह ठीक है, चुनौतियां बहुत है, अगर इस देश के सामने करोड़ों संकट है, तो करोड़ों समाधान भी हैं और मेरा 130 करोड़ देशवाजसियों पर भरोसा है। 130 करोड़ देशवोसी निर्धारित लक्ष्यं के साथ संकल्प के प्रति समर्पण के साथ जब 130 करोड़ देशवोसी एक कदम आगे रखते हैं न तो हिन्दुंस्तााान 130 कदम आगे बढ़ जाता है। इस सामर्थ्य को लेकर के हमें आगे बढ़ना है। इस अमृतकाल में, अभी अमृतकाल की पहली बेला है, पहली प्रभात है, हमें आने वाले 25 साल के एक पल भी भूलना नहीं है। एक–एक दिन, समय का प्रत्येडक क्षण, जीवन का प्रत्येरक कण, मातृभूमि के लिए जीना और तभी आजादी के दीवानों को हमारी सच्ची श्रंद्धाजलि होगी। तभी 75 साल तक देश को यहां तक पहुंचाने में जिन–जिन लोगों ने योगदान दिया, उनका पुण्य् स्मयरण हमारे काम आयेगा।

मैं देशवासियों से आग्रह करते हुए नई संभावनाओं को संजोते हुए, नए संकल्पों को पार करते हुए आगे बढ़ने का विश्वृास लेकर आज अमृतकाल का आरंभ करते हैं। आजादी का अमृत महोत्संव, अब अमृतकाल की दिशा में पलट चुका है, आगे बढ़ चुका है, तब इस अमृतकाल में सबका प्रयास अनिवार्य है। सबका प्रयास ये परिणाम लाने वाला है। टीम इंडिया की भावना ही देश को आगे बढ़ाने वाली है। 130 करोड़ देशवोसियों की ये टीम इंडिया एक टीम के रूप में आगे बढ़कर के सारे सपनों को साकार करेगी। इसी पूरे विश्वा्स के साथ मेरे साथ बोलिए ––

भारत माता की जय, वंदे मातरम, बहुत–बहुत धन्य वाद!

परिवारवाद और भ्रष्टाचार विकसित भारत बनाने में बाधक

– डॉ0 दिलीप अग्निहोत्री

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने लाल किले की प्राचीर से विकसित भारत का मंसूबा व्यक्त किया। यह उनका तत्कालिक संकल्प मात्र नहीं था। बल्कि उनकी सरकार विगत आठ वर्षों से इसी संकल्प को सिद्ध करने में लगी है। लेकिन परिवारवाद और भ्रष्टाचार भारत को विकसित बनाने में बाधक है। नरेन्द्र मोदी ने लाल किले की प्राचीर से किसी पार्टी का नाम नहीं लिया। लेकिन बिहार और पश्चिम बंगाल का उदाहरण सामने है। पश्चिम बंगाल में परिवारावादी पार्टी का शासन है। तृणमूल कांग्रेस सुप्रीमों ममता बनर्जी के भतीजे युवराज के रूप में है। ऐसी पार्टीयों में सभी बड़े कार्यों पर मुखिया की नजर रहती है। ममता बनर्जी के विश्वासपात्र की बड़े घोटाले में संलिप्तता का ममला उजागर हुआ है। बड़ी मात्रा में अवैध संपत्ति ईडी को मिली है। लेकिन ममता बनर्जी की सरकार को विधानसभा में पूर्ण बहुमत प्राप्त है। बिहार में नीतीश कुमार ने जिस पार्टी पर घोटालों के आरोप लगाए थे। जिसके संस्थापक की वर्तमान स्थिति सबके सामने हैं। उसी पार्टी के साथ नीतीश ने सरकार बना ली है। तेजस्वी यादव उनके साथ उपमुख्यमंत्री है। इतिहास ने अपने को दोहराया है।

नितीश और तेजस्वी की यह जोड़ी दूसरी बार सरकार में है। पहली बार राजद परिवार पर भ्रष्टाचार के आरोपों के कारण ही नितीश उनसे अलग हुए थे। वह भाजपा के साथ आ गए थे। फिर लौट कर वहीं पहुँच गए। उनकी वर्तमान सरकार संख्याबल के हिसाब से पहले के मुकाबले मजबूत है। लेकिन गंभीर आरोपियों का इसमें वर्चस्व रहेगा। ऐसी स्थिति से मतदाता ही राजनीति को बचा सकते हैं। इसीलिए नरेन्द्र मोदी ने जनता के सहयोग का आह्वान किया है। ऐसा करके वह अपवाद छोड़ कर अन्य सभी पार्टियों के निशाने पर आ गए हैं। क्योंकि भाजपा और वामपंथियों को छोड़ कर सभी पार्टियां परिवारवाद पर आधारित हैं।

कम्युनिस्ट पार्टी केरल तक सिमट चुकी है। वहाँ भी वामपंथ का नया संस्करण आ गया है। मुख्यमंत्री के दामाद का जलवा सरकार और पाटी में बढ़ रहा ळै। देश के हर संस्थान में परिवारवाद को पोषित किया गया है। मोदी ने कहा कि राष्ट्रमंडल खेलों में देश के खिलाड़ियों को पहले से अधिक पदक मिले हैं। यह प्रतिभाएं पहले भी भारत में थीं, लेकिन भाई–भतीजावाद के कारण वह नहीं उभर पायीं।

भारत को विकसित बनाने के मार्ग में दूसरी सबसे बड़ी बाधा भ्रष्टाचार है। इसमें भी परिवारवादी पाटियों पर सर्वाधिक आरोप लगते हैं। नरेन्द्र मोदी ने कहा कि भ्रष्टाचार देश को दीमक की तरह खोखला कर रहा है। उससे देश को लड़ना ही होगा। सरकार का प्रयास है कि जिन्होंने देश को लूटा है। उनको लूट का धन लौटाना पड़े। मोदी सरकार ने व्यवस्था में व्यापक सुधार किया है। चालीस करोड़ जनधन खाते खोले गए। विगत आठ वर्षों में डायरेक्ट बेनिफिट ट्रांसफर के द्वारा आधार, मोबाइल जैसी आधुनिक व्यवस्थाओं का उपयोग करते हुए देश के दो लाख करोड़ रूपये को गलत लोगों के हाथों तक जाने से रोक दिया गया। आत्मनिर्भर अभियान भी भारत को विकसित बनाने में सहायक सिद्ध हो रहा है। इसमें निजी क्षेत्र की भूमिका भी महत्वपूर्ण है। पी.एल.आई. योजनाओं के माध्यम से हम दुनिया के विनिर्माण बिजलीघर बन रहे हैं। लोग मेक इन इंडिया के लिए भारत आ रहे हैं। बच्चे ने विदेशी खिलौनों का बहिष्कार कर रहे है।

नरेन्द्र मोदी ने विकसित भारत के लिए पांच प्रण का महत्व रेखांकित किया। हमको भारतीय विरासत पर गर्व करना चाहिए। वैश्विक समस्याओं का समाधान भारतीय चिंतन के

माध्यम से सम्भव है। भारत लोकतंत्र की जननी है। इसका भी देश को गर्व होना चाहिए। दासता के किसी भी निशान को हटाना, विरासत पर गर्व, एकता और अपने कर्तव्यों को पूरा करना सभी का दायित्व है। इससे भारत को विकसित बनाया जा सकता है। पंच प्रण पर अपनी शक्ति, संकल्पों और समर्थ्य को केंन्द्रित करना आवश्यक है।

आजादी का अमृत महोत्सव केवल पचहत्तर वर्ष पूरे होने के परिपेक्ष में नहीं था। बल्कि इसके माध्यम से एक भारत श्रेष्ठ भारत की संकल्प यात्रा का उद्घोष किया। हर घर तिरंगा एक भारत की अभिव्यक्ति थी। केन्द्र में मोदी और सबसे बड़े प्रदेश यूपी में योगी सरकार ने विकास के अभूतपूर्व कार्य किए। समर्पण भाव से कार्य किया। निराशा को आशा में बदल दिया गया। सबको विश्वास हुआ कि देश बदल सकता है। सबाक साथ

सबका विकास लेकर चले। इसमें सबका विश्वास जुड़ गया। स्वावलंबन के बल पर आगे की यात्रा चल रही है। समस्याओं का समाधान टुकड़ों में नहीं समग्रता से हो रहा है मुस्लिम महिलाएं तीन तलाक से भयभीत रहती थी। उनके इस भय को दूर किया गया। मुस्लिम मुल्क इसे पहले हटा चुके थे। लेकिन पहले इसे हटाने में संकोच था। नरेन्द्र मोदी ने कहा था कि यह सरकार समस्याओं को न पालती है, न उसे छोड़ती है। जनता ने जो काम सौंपा, सरकार उसे पूरा कर रही है। पिछली सरकारों ने प्रयास किये, लेकिन उसके परिणाम नहीं मिले। जम्मू कश्मीर के साथ न्याय नहीं हुआ था। अनुच्छेद तीन सौ सत्तर व पैंतीस ए को हटाया गया। वहां के लोगों को न्यास मिला। दलित, पिछड़ों के लाभ मिलेगा। इन्हें आजादी मिली। पाकिस्तान से जो यहां आए थे, उन्हें मानवीय व नागरिक अधिकार नहीं मिले थे। अब यह संभव हुआ। अलगाववाद, आतंकवाद, परिवारवाद दूर हुआ, वन नेशन वन कॉस्टिट्यूशन संभव हुआ। इसके पहले वन नेशन वन टैक्स, वन नेशन वन ग्रिड को लागू किया गया। गरीबों के लिए जनधन खाते खोले गए, शौचालय बनाये गए, आवास बनाये जा रहे हैं। उनके घरों में पेयजल पहुंचाने का प्रयास हो रहा है। जल जीवन मिशन योजना शुरू होगी। सत्तर वर्ष में नहीं हुआ, उससे चार गुना काम अगले कुछ वर्षों में पूरा हो जाएगा। पिछले कार्यकाल में औसत प्रतिदिन एक अनुपयोगी कानून हटाये गए। यजी ऑफ डूइंग बिजनेस में अभूतपूर्व सफलता मिली। आमजन के जीवन को भी सरकार आसान बनाने का प्रयास किया है। भारत को विकसित बनाया जा रहा है। नये भारत की नयी तस्वीर को हमारे सामने प्रस्तुत करता है।

परिवर्तन प्रकृति का नियम है : सुनील बंसल

राष्ट्रीय महामंत्री श्री सुनील बंसल ने कहा कि संगठनात्मक विकास व संख्यात्मक विस्तार की दृष्टि से उत्तर प्रदेश में भाजपा का मजबूत स्थान बना है। उन्होंने कहा कि राजनैतिक, सामाजिक क्षेत्र में परिवर्तन स्वाभाविक है। इसलिए जीवन के हर क्षेत्र के परिवर्तन को सकारात्मक रूप में स्वीकार करना चाहिए।

उन्होंने कहा कि धर्मपाल जी बहुत लम्बे समय तक उत्तर प्रदेश में काम कर चुके हैं। इसलिए वह उत्तर प्रदेश को बखूबी जानते हैं। परिवर्तन प्रकृति का नियम है, दायित्वों का मिलना, बदलना स्वाभाविक प्रक्रिया है और यह संगठन की अच्छी परम्परा भी है। व्यक्ति के बदलने के बाद भी विचार के लिए काम करना हमें पहले से सिखाया गया है। हमारे संगठन का मजबूत वैचारिक आधार है। धर्मपाल जी के नेतृत्व में प्रदेश संगठन आगे के चरणों में प्रवेश करने वाला है। हमने सारे चुनाव संगठन की सक्रियता व कार्यकर्ताओं की ताकत को एक दिशा में गढ़ने से जीते हैं। सभी कार्यकर्ताओं को अपने मन में एक संकल्प रखना है कि संगठन विस्तार के कार्य को मजबूत करना तथा अपने कार्य को स्थायी रूप देना है और कार्य में गुणात्मक वृद्धि लाना है। उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश ने मुझे बहुत कुछ सिखाया है। प्रदेश संगठनात्मक काम करने के लिए देश की सबसे बड़ी प्रयोगशाला है। हमारा नेतृत्व श्री नरेन्द्र मोदी जी, श्री जे0पी0 नड्डा जी, श्री अमित शाह जी, श्री योगी आदित्यनाथ जी और यशस्वी व तेजस्वी नेता कर रहे हैं हमारा काम नेतृत्व द्वारा सौंपे गए कार्यों को पूरी क्षमता समर्पण से पूरा करना है।

भारतीय जनता पार्टी के अवध, काशी, कानपुर व गोरखपुर क्षेत्र के प्रदेश व क्षेत्र के पदाधिकारियों जिला अध्यक्षों व जिला प्रभारियों की बैठक मंगलवार को पार्टी के राज्य मुख्यालय पर

सम्पन्न हुई। बैठक में पार्टी के राष्ट्रीय महामंत्री श्री सुनील बंसल, प्रदेश अध्यक्ष श्री स्वतंत्र देव सिंह, प्रदेश महामंत्री (संगठन) श्री धर्मपाल सिंह, झारखंड के प्रदेश महामंत्री (संगठन) कर्मवीर जी, उपमुख्यमंत्री श्री केशव प्रसाद मौर्य, श्री ब्रजेश पाठक, उपस्थित रहे। बैठक का संचालन प्रदेश महामंत्री गोविन्द नारायण शुक्ल ने किया। बैठक में उपस्थित पार्टी पदाधिकारियों का नवनियुक्त प्रदेश महामंत्री (संगठन) श्री धर्मपाल सिंह जी का औपचारिक परिचय हुआ। इसके पूर्व मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी से उनकी भेंटवार्ता हुई।

प्रदेश महामंत्री (संगठन) श्री धर्मपाल सिंह जी ने कहा कि उत्तर प्रदेश में संगठनात्मक दृष्टि से भाजपा पूरे प्रदेश में सर्वस्पर्शी, सर्वसमावेशी, सर्वव्यापी और सर्वग्राही दल के रूप में ख्याति प्राप्त है। राष्ट्रीय महामंत्री श्री सुनील बंसल जी की संगठन को इन सभी गुणों से युक्त करने में बड़ी भूमिका रही है। उन्होंने कहा कि मुझे संगठन द्वारा जो दायित्व मिला है उस पर मैं पूरी तरह खरा उतरने का काम करूंगा। श्री सुनील बंसल जी के नेतृत्व में प्रदेश में संगठन को नया आयाम मिला है, यह पार्टी कार्यकर्ताओं के परिश्रम और सहयोग से संभव हुआ है। भाजपा संगठन के विस्तार का आधार कार्यकर्ता हैं और कार्यकर्ताओं के बल पर संगठन का विस्तार अनवरत जारी रहेगा। उन्होंने कहा कि संगठन ऐसे स्थानों पर भी अपनी पहुंच सुनिश्चित करेगा जहां अभी उसकी पहुंच नहीं है। आप सभी कार्यकर्ता संगठन की शक्ति हैं, आपके प्रयास, सहयोग और जवाबदेही से संगठन की अनथक यात्रा जारी रहेगी।

प्रदेश अध्यक्ष श्री स्वतंत्र देव सिंह ने कहा कि भाजपा के कार्यकर्ता तपस्वी हैं। वह बहुत संघर्श करते हैं। सुनील जी के रहते हुए बड़ी संख्या में पार्टी के कार्यकर्ताओं का समायोजन भी हुआ है। उत्तर प्रदेश के कार्यकर्ता परिश्रम की पराकाश्ठा करते हैं। उन्होंने विश्वास दिलाया कि आगे भी पार्टी के कार्यकर्ता अपने परिश्रम से आगामी नगर निकाय व लोकसभा चुनाव में विजय के नए कीर्तिमान बनाएगें।

प्रदेश के उपमुख्यमंत्री श्री केशव प्रसाद मौर्य ने कहा कि उत्तर प्रदेश में कार्यकर्ताओं ने अथक परिश्रम कर पार्टी को बुलन्दियों पर पहुंचाया है। कहा कि, श्री सुनील बंसल जी ने उत्तर प्रदेश को संगठन मंत्री के रूप में पार्टी के प्रति निष्ठावान और समर्पित कार्यकर्ताओं की टीम बूथ स्तर तक खड़ी की है। कहा कि, 2014 से 2022 तक हुए हर चुनाव में पार्टी को अभूतपूर्व सफलता हासिल हुई है। श्री मौर्य ने विश्वास व्यक्त किया कि 2024 के लोकसभा चुनाव में पार्टी प्रदेश में सभी 80 सीटों पर विजयी होगी।

उपमुख्यमंत्री श्री बृजेश पाठक ने कहा कि पार्टी कार्यकर्ताओं के अथक परिश्रम के बल पर 2014 से हमारी विजय यात्रा अनवरत जारी है। कहा कि, वर्तमान समय में उत्तर प्रदेश में बूथ स्तर तक पार्टी के बड़ी संख्या में सक्रिय कार्यकर्ताओं ने पार्टी की विचारधारा को जन–जन तक पहुंचाने का काम किया है।

राष्ट्रध्वज : संघ

– लोकेन्द्र सिंह

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवकों के मन में राष्ट्रीय प्रतीकों को लेकर किसी प्रकार का भ्रम नहीं है। राष्ट्रीय गौरव के मानबिन्दुओं के लिए संघ के कार्यकर्ताओं ने अपना बलिदान तक दिया है। राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा भी ऐसा ही एक राष्ट्रीय प्रतीक है। चूंकि संघ 'प्रसिद्धी पराङ्मुख' के सिद्धांत पर चला है। जो मातृभूमि के लिए अनिवार्यरूप से करणीय कार्य हैं, उसका यश क्यों लेना? संघ का कार्यकर्ता इसलिए कोई काम नहीं करता है कि उसका नाम दस्तावेजों में लिखा जाये और उसको यश मिले। अपना स्वाभाविक कर्तव्य मानकर ही वह सारा कार्य करता है। अपने योगदान के दस्तावेजीकरण के प्रति संघ की उदासीनता का लाभ संघ के विरुद्ध दुष्प्रचार करनेवाले समूहों ने उठाया और उन्होंने संघ के सन्दर्भ में नाना प्रकार के भ्रम उत्पन्न करने के प्रयास किये। इस सबके बीच, जो निश्छल लोग हैं, उन्होंने संघ की वास्तविक प्रतिमा के दर्शन किये हैं किन्तु कुछ लोग राजनीतिक दुराग्रह एवं पूर्वाग्रह के कारण संघ को लेकर भ्रमित रहते हैं। ऐसा ही एक भ्रम है कि संघ के स्वयंसेवक राष्ट्रध्वज को मान नहीं देते हैं और तिरंगा नहीं फहराते हैं। इसी भ्रम में पड़कर कांग्रेस को भी संघ के दर्शन हो गए। वर्ष 2016 में जेएनयू में देशविरोधी नारे लगने के बाद यह बात निकलकर आई कि युवा पीढ़ी में देशभक्ति का भाव जगाने के लिए सभी शिक्षा संस्थानों में राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा लगाया जाना चाहिए। यह आग्रह कुछ लोगों को इतना चुभ गया कि वे आरएसएस और तिरंगे के संबंधों पर मिथ्याप्रचार करने लगे। इस मिथ्याप्रचार में फंसकर कांग्रेस ने 22 फरवरी, 2016 को मध्यप्रदेश के संघ कार्यालयों पर तिरंगा फहराने की योजना बनाई थी। कांग्रेस ने सोचा होगा कि संघ के कार्यकर्ता कार्यालय पर तिरंगा फहराने का विरोध करेंगे। तिरंगा फहराना था शिक्षा संस्थानों में लेकिन कांग्रेस निकल पड़ी संघ कार्यालयों की ओर।

इंदौर में रामबाग स्थित राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्यालय 'अर्चना' में एक रोचक वाकया घटित हुआ। इसकी चर्चा सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्र में खूब हुई। स्वयंसेवकों ने तिरंगा लेकर आये कांग्रेसी नेताओं का 'लाल कालीन' बिछाकर स्वागत किया। तिलक लगाकर कांग्रेसियों का अभिनंदन किया। कार्यालय पर तिरंगा फहराने में उन्होंने कांग्रेस नेताओं की सहायता की। झंडावंदन के बाद अल्पाहार भी कराया। इस दौरान संघ के संबंध में कांग्रेस की भ्रामक धारणाओं को दूर करने का प्रयास भी किया। संभवतः कांग्रेस के वर्तमान नेता यह भूल गए होंगे कि सेवानिष्ठा, अनुशासन और राष्ट्र के प्रति समर्पण में संघ के कार्यकर्ताओं का आदर स्वयं कांग्रेस के कई वरिष्ठ नेता करते हैं।

वर्ष 1962 में भारत–चीन युद्ध में जिस प्रकार का अदम्य साहस दिखाकर संघ के कार्यकर्ताओं ने सेना और सरकार का सहयोग किया, उससे तत्कालीन प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू की धारणा भी बदल गई। चीन के आक्रमण के समय नेहरूजी को कम्युनिस्टों से धोखा मिला, जिनका पंडितजी समर्थन करते थे। वहीं, जिस आरएसएस के प्रति नेहरूजी के भाव कटु थे, आपात स्थिति में उसी संगठन का भरपूर सहयोग शासन को मिला। संघ की देशभक्ति से प्रभावित होकर प्रधानमंत्री नेहरूजी ने आरएसएस को गणतंत्र दिवस की राष्ट्रीय परेड में हिस्सा लेने के लिए आमंत्रित किया। 1963 की राष्ट्रीय परेड में संघ के स्वयसेवकों ने तिरंगे के सामने ही कदम–से–कदम मिलकर परेड की। स्मरण रखें कि जब चीनी सेना नेफा (अब अरुणाचल प्रदेश) में आगे बढ़ रही थी, तेजपुर (असम) से कमिश्नर सहित सारा सरकारी तंत्र तथा जनसाधारण भयभीत होकर भाग गए थे। तब आयुक्त मुख्यालय पर तिरंगा फहराए रखने के लिए 16 स्वयंसेवक पूरा समय वहां डटे रहे।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्यकर्ताओं ने प्रतिकूल परिस्थितियों में भी राष्ट्र ध्वज का मान बढ़ाने का कार्य किया है। 1947 में जब देश का विभाजन हो गया और जम्मू–कश्मीर में विवाद प्रारंभ हो गया तब 14 अगस्त को श्रीनगर की कई इमारतों पर पाकिस्तानी

झंडे फहरा दिए गए थे। ऐसी स्थिति में स्वयंसेवकों ने कुछ ही समय में तीन हजार से अधिक राष्ट्रीय ध्वज सिलवाकर श्रीनगर को तिरंगे से पाटकर स्पष्ट सन्देश दिया कि जम्मू–कश्मीर भारत का हिस्सा है, यहाँ सिर्फ तिरंगा लहराएगा। जम्मू–कश्मीर में जब कांग्रेस ने 'दो निशान–दो विधान–दो प्रधान' की व्यवस्था को स्वीकार कर लिया था तब भारत के तिरंगे, संविधान और संप्रभुता के लिए संघ के लोगों ने 'एक निशान–एक विधान–एक प्रधान' का नारा देते हुए आन्दोलन चलाया। 1952 में जम्मू संभाग में आयोजित 'तिरंगा सत्याग्रह' में संघ के 15 स्वयंसेवक बलिदान हुए। शेख अब्दुल्ला के इशारे पर पुलिस ने छम्ब, सुंदरवनी, हीरानगर और रामवन में 'तिरंगा सत्याग्रहियों' पर गोलियां चलायीं, जिसमें मेलाराम, कृष्णलाल, बिहारी और शिवा सहित 15 स्वयंसेवक मारे गए थे। जम्मू–कश्मीर में राष्ट्र ध्वज के लिए संघ ने बलिदान दिया है, कम्युनिस्टों और कांग्रेसियों ने नहीं। स्वतंत्र भारत में तिरंगा फहराने और उसकी प्रतिष्ठा के लिए संघ और भाजपा के कार्यकर्ताओं के अलावा किसका बलिदान हुआ है? संघ कार्यालयों पर तिरंगा फहराने की बहादुरी दिखानेवालों में से किसने श्रीनगर के लाल चौक पर तिरंगा फहराने का साहस दिखाया है? यहाँ भी आतंकवादी हमले के खतरे के बाद भी जनसंघ/भारतीय जनता पार्टी के नेता राष्ट्रीय ध्वज फहराते रहे हैं। आज जम्मू–कश्मीर में शान से तिरंगा लहराता है तो इसका सारा श्रेय संघ के कार्यकर्ताओं को जाता है। इसमें किसी को संदेह नहीं होना चाहिए कि संघ ने आन्दोलन नहीं किया होता तो लम्बे समय तक वहां राष्ट्र ध्वज के बरक्स एक ओर झंडा फहरा रहा होगा। आखिर विभाजनकारी एवं अस्थायी अनुच्छेद–370 और 35ए को भी अब जाकर 2019 में निष्प्रभावी किया गया, यह कार्य भी भाजपा सरकार ने किया।

दादर नगर हवेली और गोवा के भारत विलय में भी संघ द्वारा निर्णायक भूमिका का निर्वहन किया गया। 21 जुलाई, 1954 को पुर्तगालियों के कब्जे से दादर को मुक्त कराया गया। 28 जुलाई को नरोली और फिपारिया मुक्त कराये गए। पुणे के संघचालक विनायक राव आपटे के नेतृत्व में 2 अगस्त, 1954 को संघ के 100 से अधिक कार्यकर्ताओं ने सिलवासा (दादरा और नगर हवेली का मुख्यालय) में घुसकर वहां से पुर्तगाली झण्डा उखाड़कर तिरंगा फहराया था। इसी प्रकार 1955 में संघ के स्वयंसेवकों ने गोवा मुक्ति आन्दोलन में प्रभावी भूमिका का निर्वहन किया। देशभर से संघ के कार्यकर्ता राष्ट्रीय ध्वज के साथ गोवा पहुंचे थे। कर्नाटक से जगन्नाथ राव जोशी सैकड़ों कार्यकर्ताओं के साथ पणजी पहुंचे। इस आन्दोलन में सहभागिता के कारण उन्हें लगभग दो वर्ष जेल में बिताने पड़े। मध्यप्रदेश के देवास से उज्जैन के नारायण बलवंत उपाख्य 'राजाभाऊ महाकाल' कार्यकर्ताओं की टोली के साथ गोवा मुक्ति आन्दोलन में शामिल हुए। राजाभाऊ महाकाल तिरंगा झंडा लेकर जत्थे में सबसे आगे चल रहे थे। पुर्तगाली सैनिकों ने गोलीबारी शुरू कर दी लेकिन स्वयंसेवकों की यह टोली आगे बढ़ती रही। सबसे पहले बसंत राव ओक के पैर में गोली लगी, उसके बाद पंजाब के हरनाम सिंह के सीने पर गोली लगी। इसके बाद भी जत्था आगे बढ़ता रहा। पुर्तगाली सैनिक ने राजाभाऊ महाकाल के सिर में निशाना लगाया। गोली लगते ही राजाभाऊ महाकाल गिर पड़े लेकिन तिरंगा ज़मीन पर गिरता उससे पहले उन्होंने अपने साथी कार्यकर्ता को तिरंगा थमा दिया। चिकित्सालय में 15 अगस्त, 1955 को उनका निधन हुआ। इसी आन्दोलन के अंतर्गत पणजी सचिवालय पर तिरंगा फहराने के कारण मोहन रानाडे नाम के स्वयंसेवक को पुर्तगाली पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। तिरंगा फहराने के लिए उन्हें 17 वर्ष पुर्तगाल की लिस्बन जेल में काटने पड़े थे, जबकि गोवा 1961 में पुर्तगाल के कब्जे से मुक्त हो गया था। लेकिन सरकार ने गोवा मुक्ति आन्दोलन के स्वतंत्रता सेनानियों एवं बलिदानियों की सुध ही नहीं ली।

ऐसे अनेक प्रसंग हैं, जिनका वर्णन यहाँ किया जा सकता है। प्रत्येक प्रसंग यह सिद्ध करता है कि राष्ट्रीय प्रतीकों के प्रति राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की निष्ठा, समर्पण, श्रद्धा सर्वोपरि है। जिस तरह भारत का सामान्य देशभक्त नागरिक देश के गौरव प्रतीकों के प्रति आदर और समर्पण का भाव रखता है, ठीक उसी तरह संघ का प्रत्येक स्वयंसेवक का भाव है।

लक्ष्य... प्रण... पथ...

'अंत्योदय' के पथिक

चौ0 भूपेन्द्र सिंह

नव नियुक्त प्रदेश अध्यक्ष भाजपा, उत्तर प्रदेश

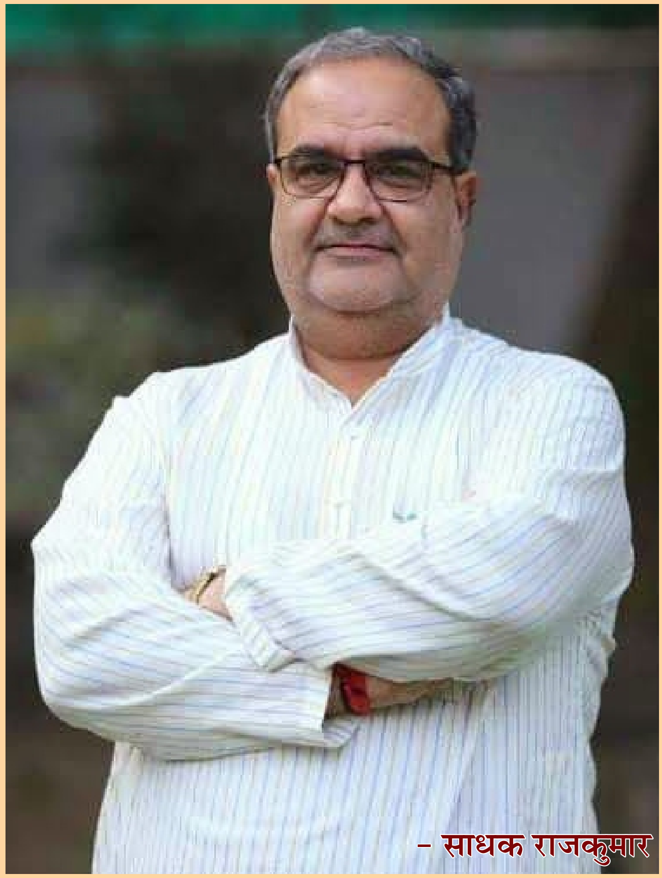

– साधक राजकुमार

विश्व के सबसे बड़े राजनैतिक दल भारतीय जनता पार्टी उत्तर प्रदेश जैसे महत्वपूर्ण प्रदेश के काफी विचार मंथन के बाद श्री भूपेन्द्र सिंह जी प्रदेश अध्यक्ष नियुक्त हुए हैं।

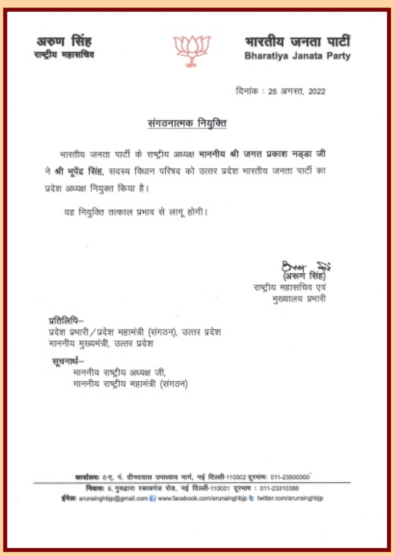

अरुण सिंह
राष्ट्रीय महासचिव

भारतीय जनता पार्टी
Bharatiya Janata Party

दिनांक : 25 अगस्त, 2022

संगठनात्मक नियुक्ति

भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष **माननीय श्री जगत प्रकाश नड्डा जी** ने **श्री भूपेंद्र सिंह**, सदस्य विधान परिषद को उत्तर प्रदेश भारतीय जनता पार्टी का प्रदेश अध्यक्ष नियुक्त किया है।

यह नियुक्ति तत्काल प्रभाव से लागू होगी।

(अरुण सिंह)
राष्ट्रीय महासचिव एवं
मुख्यालय प्रभारी

प्रतिलिपि–
प्रदेश प्रभारी/प्रदेश महामंत्री (संगठन), उत्तर प्रदेश
माननीय मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश

सूचनार्थ–
माननीय राष्ट्रीय अध्यक्ष जी,
माननीय राष्ट्रीय महामंत्री (संगठन)

कार्यालय: 6-ए, पं. दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 दूरभाष: 011-23500000
निवास: 6, गुरुद्वारा रकाबगंज रोड, नई दिल्ली-110001 दूरभाष : 011-23310386
ईमेल: arunsinghbjp@gmail.com www.facebook.com/arunsinghbjp twitter.com/arunsinghbjp

उ0प्र0 के हृदय स्थली पीतल नगरी मुरादाबाद के महेन्द्री सिकन्दर पुर गाँव में संभ्रान्त किसान परिवार में 1966 में आपका जन्म हुआ प्रारम्भिक शिक्षा गाँव के प्राथमिक विद्यालय में हुई। शेश शिक्षा दीक्षा मुरादाबाद में हुई। विद्यार्थी जीवन से ही आपका राश्ट्रीय स्वयं सेवक संघ से सम्बन्ध हो गया।

प्रारम्भिक दिनों में जब राम जन्मभूमि आन्दोलन जोर पकड़ रहा था उस समय आप विश्व हिन्दू परिशद मुरादाबाद के अध्यक्ष हुए उस समय अयोध्या, मथुरा, काशी का आन्दोलन तेजी से उभरा था विश्व हिन्दू परिशद की सभी प्रकार की गतिविधियों में आपकी महत्वपूर्ण भूमिका रही।

1991 में भारतीय जनता पार्टी की सक्रिय राजनीति में आपने प्रवेश किया। कोशाध्यक्ष, महामंत्री जैसे महत्वपूर्ण पदों पर कार्य करते हुए आप 1996 में मुरादाबाद के जिलाध्यक्ष हो गये। 1999 में संभल लोकसभा का भारतीय जनता पार्टी के प्रत्याशी के रूप में चुनाव लड़ा। 2007 में क्षेत्रीयमंत्री पश्चिम उ0प्र0 रहे। कार्य पद्धति एवं लोक संग्रही प्रवृत्ति के कारण 2011 में पश्चिम क्षेत्र के क्षेत्रीय अध्यक्ष हो गये। सर्वस्पर्शी सर्वव्यापी संगठनात्मक गतिविधियों के दक्ष कार्यकर्ता होने के कारण 2016 में विधान परिशद के सदस्य हो गये। 2017 में राज्यमंत्री स्वतंत्र प्रभार, पंचायती राज एवं निर्माण विभाग एवं 2019 में पंचायती राज विभाग के कैबिनेट मंत्री है। करोना आपदा काल, किसान आन्दोलन के समय पश्चिम उ0प्र0 में सेवा का अनूठा उदाहरण आपने कार्यकर्ता के बीच रहकर दिया। संगठन और कार्यकर्ताओं में लोकप्रिय भूपेन्द्र चौधरी पश्चिम उत्तर प्रदेश की जाट खाप में भी अति लोकप्रिय हैं। संगठन का व्यापक अनुभव है। अब उत्तर प्रदेश में संगठन की कमान आपके हाथ में है। बधाई शुभकामनाये।

संगठनात्मक नियुक्तियां

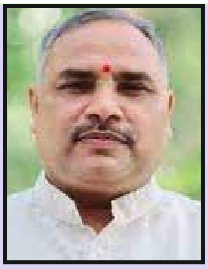

कर्मवीर सिंह

महामंत्री (संगठन) झारखंड प्रदेश

भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष ने उत्तर प्रदेश में सह संगठन महामंत्री रहे श्री कर्मवीर सिंह को झारखंड प्रदेश महामंत्री (संगठन) नियुक्त किया। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के बाल स्वयंसेवक, ब्रज प्रांत के पूर्व प्रान्त प्रचारक श्री कर्मवीर जी वर्तमान में उत्तर प्रदेश के प्रदेश सह महामंत्री संगठन रहे। आप का केन्द्र मेरठ था। आप कार्यकर्ताओं में अति लोकप्रिय हैं।

धर्मपाल सिंह

महामंत्री (संगठन) उत्तर प्रदेश

भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जगत प्रकाश नड्डा ने श्री धर्मपाल सिंह को प्रदेश महामंत्री 'संगठन' उत्तर प्रदेश नियुक्त किया। पूर्व में वे अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के क्षेत्रीय संगठन मंत्री का दायित्व सम्भाल चुके हैं। 1984 में एक कार्यकर्ता के तौर पर एबीवीपी में शामिल हुए और 6 सालों में अपने मेहनत और लगन से वह एबीवीपी के पूर्णकालिक कार्यकर्ता बन गए। धर्मपाल सिंह ने उत्तर प्रदेश में प्रांत संगठन मंत्री लंबे समय तक रहे। एबीवीपी में ही पश्चिम क्षेत्र के क्षेत्र संगठन मंत्री उत्तर प्रदेश के क्षेत्र संगठन मंत्री भी रहे। धर्मपाल सिंह बाल स्वयंसेवक है कार्यकर्ताओं के बीच बेहद सुलभ सरल और सहज हैं।

सुनील बंसल बने भाजपा के राष्ट्रीय महामंत्री

भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जगत प्रकाश नड्डा ने 10 अगस्त, 2022 को भाजपा, उत्तर प्रदेश के महामंत्री (संगठन) श्री सुनील बंसल को पार्टी का राष्ट्रीय महामंत्री नियुक्त किया। इसके साथ ही, उन्हें पश्चिम बंगाल, तेलंगाना और ओडिशा जैसे तीन महत्वपूर्ण प्रदेशों के प्रभारी की जिम्मेदारी भी सौंपी गई है। पूर्व में श्री बंसल अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के राष्ट्रीय सह संगठन मंत्री का दायित्व संभाल चुके हैं।

महेंद्र भट्ट

उत्तराखंड प्रदेश भाजपा अध्यक्ष

भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जगत प्रकाश नड्डा ने श्री महेंद्र भट्ट को भाजपा, उत्तराखंड प्रदेश अध्यक्ष नियुक्त किया। श्री भट्ट 1991 में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् से जुड़े। वे 2002 से 2007 तक नंदप्रयाग सीट से विधायक थे और 2017 के विधानसभा चुनाव में बद्रीनाथ सीट से जीते। उन्हें युवा मोर्चा का प्रदेश अध्यक्ष भी नियुक्त किया गया था। श्री महेंद्र भट्ट 2015 से 2020 तक प्रदेश भाजपा मंत्री भी रहे।

अरुण साव

छत्तीसगढ़ प्रदेश भाजपा अध्यक्ष

भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जगत प्रकाश नड्डा ने बिलासपुर से सांसद श्री अरुण साव को भाजपा, छत्तीसगढ़ प्रदेश अध्यक्ष नियुक्त किया। पेशे से वकील श्री साव ने 1990 में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के सदस्य के रूप में अपने सार्वजनिक जीवन की शुरुआत की और छत्तीसगढ़ के बिलासपुर लोकसभा क्षेत्र से 2019 में पहली बार लोकसभा के लिए चुने गए।

1,50,173 करोड़ रुपए में बिका 5जी स्पेक्ट्रम

गत दो अगस्त को केंद्रीय संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय द्वारा जारी एक विज्ञप्ति के अनुसार भारत सरकार ने नीलामी के लिए 72,098 मेगाहट्र्ज स्पेक्ट्रम रखा था, जिसमें से 51,236 मेगाहट्र्ज (कुल का 71 प्रतिशत) 1,50,173 करोड़ रुपये की बोली के साथ बेचा गया।

वार्षिक किश्तों की गणना में ब्याज दर 7.2 प्रतिशत है और कुछ प्रतिभागी अधिक अग्रिम भुगतान भी कर सकते हैं।

पहली बार 600 मेगाहट्र्ज बैंड नीलामी के लिए रखा गया था। इस बैंड के लिए कोई बोली प्राप्त नहीं हुई थी। मोबाइल टेलीफोनी के लिए 600 मेगाहट्र्ज बैंड का उपकरण इकोसिस्टम अभी तक विकसित नहीं हुआ है। कुछ वर्षों में यह बैंड महत्वपूर्ण हो सकता है।

700 मेगाहट्र्ज में 5जी इकोसिस्टम अच्छी तरह से विकसित है। इसका एक बड़ा सेल आकार है और बुनियादी ढांचे की आवश्यकता कम है। यह बैंड एक बड़ी रेंज और अच्छी कवरेज उपलब्ध करता है। मैसर्स रिलायंस जियो ने अखिल भारतीय 10 मेगाहट्र्ज स्पेक्ट्रम प्राप्त किया है।

800 से 2,500 के बीच के बैंड के लिए प्रतिभागियों ने मुख्य रूप से क्षमता बढ़ाने और 4जी कवरेज में सुधार के लिए स्पेक्ट्रम हेतु बोली लगाई है।

मिड बैंड यानी 3300 मेगाहट्र्ज बैंड अच्छी प्रवाह क्षमता (थ्रूपुट) प्रदान करने में महत्वपूर्ण है। तीनों मौजूदा ऑपरेटरों ने इस बैंड में स्पेक्ट्रम प्राप्त कर लिया है। ऑपरेटरों द्वारा मौजूदा 4जी क्षमता को बढ़ाने और 3300 मेगाहट्र्ज बैंड में 5जी सेवाएं उपलब्ध कराने की संभावना है।

एमएम वेव बैंड यानी 26 गीगाहट्र्ज में उच्च प्रवाह क्षमता है, लेकिन इसकी रेंज बहुत कम है। इस बैंड के कैप्टिव या गैर–सार्वजनिक नेटवर्क के लिए उपयोग किए जाने की संभावना है। इस बैंड में पूरे विश्व में फिक्स्ड वायरलेस एक्सेस (एफडब्ल्यूए) लोकप्रिय हो रहा है। एफडब्ल्यूए को उच्च घनत्व/भीड़ वाले शहरी क्षेत्रों में फाइबर के विकल्प के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है। सभी चार प्रतिभागियों ने इस बैंड में स्पेक्ट्रम प्राप्त किया है।

मैसर्स मेटल स्क्रैप ट्रेडिंग कॉरपोरेशन (एमएसटीसी), भारत सरकार का एक सार्वजनिक क्षेत्र उपक्रम नीलामकर्ता है।

उल्लेखनीय है कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा किए गए सुधारों और स्पष्ट नीति निर्देश के परिणामस्वरूप सफल स्पेक्ट्रम नीलामी हुई। इससे यह भी पता चलता है कि दूरसंचार क्षेत्र विकास की राह पर अग्रसर है।

जुलाई, 2022 में 1,48,995 करोड़ रुपये पहुंचा सकल जीएसटी राजस्व

केन्द्रीय वित्त मंत्रालय द्वारा एक अगस्त को जारी विज्ञप्ति के अनुसार जुलाई, 2022 में सकल जीएसटी राजस्व संकलन 1,48,995 करोड़ रुपये रहा, जिसमें जीएसटी 25,751 करोड़ रुपये, एसजीएसटी 32,807 करोड़ रुपये, आईजीएसटी 79,518 करोड़ रुपये है (इसमें आयातित माल पर 41,420 करोड़ रुपये सहित) और उपकर 10,920 करोड़ रुपये (आयातित माल पर 995 करोड़ रुपये सहित) है। यह जीएसटी लागू होने के बाद से अब तक का दूसरा सर्वाधिक राजस्व है।

केंद्र सरकार ने आईजीएसटी से सीजीएसटी में 32,365 करोड़ रुपये और एसजीएसटी में 26,774 करोड़ रुपये समायोजित कर दिये हैं। जुलाई, 2022 के मद्देनजर नियमित समायोजन के बाद केंद्र और राज्यों का कुल राजस्व सीजीएसटी के मद में 58,116 करोड़ रुपये और एसजीएसटी के मद में 59,581 करोड़ रुपये है। पिछले वर्ष इसी माह के 1,16,393 करोड़ रुपये के प्राप्त जीएसटी राजस्व की तुलना में इस बार का राजस्व 28 प्रतिशत अधिक है।

जुलाई के लिये जीएसटी राजस्व संकलन अब तक का दूसरा सर्वाधिक और पिछले वर्ष इसी माह के दौरान संकलित राजस्व से 28 प्रतिशत अधिक

अब लगातार पांच महीनों से मासिक जीएसटी राजस्व 1.4 लाख करोड़ रुपये से अधिक दर्ज किया गया। इस तरह हर महीने उसमें सतत बढ़ोतरी होती रही। पिछले वर्ष के इसी समय की तुलना में जुलाई, 2022 तक जीएसटी राजस्व की बढ़ोतरी 35 प्रतिशत अधिक रही, जिससे पता चलता है कि उसमें तेजी कायम थी। इससे साफ पता चलता है कि परिषद् ने पूर्व में बेहतर कार्यान्वयन को सुनिश्चित करने के जो विभिन्न उपाय किये थे, यह उसी का परिणाम है।

बेहतर तौर–तरीके के साथ आर्थिक बहाली का भी जीएसटी राजस्वों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा। जून, 2022 के दौरान 7.45 करोड़ ई–वे बिल बनाये गये, जो मई, 2022 की तुलना में थोड़ा सा अधिक है।

केंद्र सरकार ने चीनी सीजन 2022–23 में चीनी मिलों द्वारा देय गन्ना उत्पादक किसानों के लिए उचित और लाभकारी मूल्य को दी मंजूरी

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में आर्थिक मामलों की मंत्रिमंडलीय समिति ने तीन अगस्त को गन्ना उत्पादक किसानों के हित को ध्यान में रखते हुए चीनी सीजन 2022–23 (अक्टूबर–सितंबर) के लिए 10.25 प्रतिशत की मूल रिकवरी दर के लिए गन्ने के उचित और लाभकारी मूल्य (एफआरपी) 305 रुपये प्रति क्विंटल को मंजूरी दे दी।

चीनी सीजन 2022–23 के लिए गन्ने के उत्पादन की ।2 + थ्स लागत (यानी वास्तविक भुगतान की गई लागत के साथ पारिवारिक श्रम का मूल्य) 162 रुपये प्रति क्विंटल है। 10.25 प्रतिशत की भरपाई दर पर 305 रुपये प्रति क्विंटल का यह एफआरपी उत्पादन लागत से 88.3 प्रतिशत अधिक है। यह किसानों को उनकी लागत पर 50 प्रतिशत से अधिक का लाभ प्रदान करने का वादा सुनिश्चित करता है। चीनी सीजन 2022–23 के लिए एफआरपी मौजूदा चीनी सीजन 2021–22 की तुलना में 2.6 प्रतिशत अधिक है।

गन्ना उत्पादक किसानों के लिए अब तक का अधिकतम 305 रुपये/क्विंटल का उचित और लाभकारी मूल्य स्वीकृत किया गया। किसानों की आय बढ़ाने के लिए सरकार ने पिछले 8 वर्षों में उचित और लाभकारी मूल्य में 34 प्रतिशत से अधिक वृद्धि की

किसानों की आय बढ़ाने के लिए केंद्र सरकार प्रतिबद्ध

उपर्युक्त निर्णय से 5 करोड़ गन्ना उत्पादक किसानों और उनके आश्रितों के साथ–साथ चीनी मिलों और संबंधित सहायक गतिविधियों में कार्यरत 5 लाख श्रमिकों को लाभ होगा। 9 साल पहले 2013–14 चीनी सीजन में एफआरपी सिर्फ 210 रुपये प्रति क्विंटल था और सिर्फ 2397 एलएमटी गन्ना चीनी मिलों द्वारा खरीदा गया था। किसानों को केवल गन्ने की बिक्री से चीनी मिलों से सिर्फ 51,000 करोड़ मिलते थे। जबकि वर्तमान चीनी सीज़न 2021–22 में चीनी मिलों द्वारा लगभग 3,530 लाख टन गन्ना खरीदा गया, जिसकी कीमत 1,15,196 करोड़ रुपये है, जो अब तक सबसे अधिक है। केंद्र सरकार की सक्रिय नीतियों के कारण गन्ने की खेती और चीनी उद्योग पिछले 8 वर्षों में एक लंबा सफर तय कर चुके हैं और अब आत्मनिर्भरता के स्तर पर पहुंच गए हैं। यह समय पर सरकारी हस्तक्षेप और चीनी उद्योग, राज्य सरकारों, केंद्र सरकार के विभिन्न विभागों के साथ–साथ किसानों के साथ सहयोग का परिणाम है। हाल के वर्षों में चीनी क्षेत्र के लिए केंद्र सरकार द्वारा किए गए मुख्य उपाय निम्न हैं:

- गन्ने के एफआरपी को गन्ने के उत्पादकों के लिए एक गारंटीकृत मूल्य सुनिश्चित करने के लिए तय किया गया है।
- केंद्र सरकार ने पिछले 8 वर्षों में एफआरपी में 34 प्रतिशत से अधिक की वृद्धि की है।
- सरकार ने चीनी के न्यूनतम बिक्री मूल्य (एमएसपी) की संकल्पना को भी प्रस्तुत किया है ताकि चीनी की पूर्व–मिल कीमतों में गिरावट और गन्ना बकाया के संचय को रोकने के लिए (एमएसपी शुरुआत में 29 रुपये प्रति किलोग्राम 7 जून, 2018 से प्रभावी रूप से लागू करने के लिए तय किया गया; संशोधित 31 रुपये प्रति किलोग्राम 14 फरवरी 2019 से प्रभावी।
- चीनी मिलों के निर्यात की सुविधा के लिए, बफर स्टॉक को बनाए रखने के लिए, इथेनॉल उत्पादन क्षमता को बढ़ाने के लिए और किसानों के बकाया भुगतान के लिए चीनी मिलों को 18,000 करोड़ रुपये से अधिक की वित्तीय सहायता।
- अधिशेष चीनी को इथेनॉल के उत्पादन में बदलकर चीनी मिलों की वित्तीय स्थितियों में सुधार किया। नतीजतन, वे गन्ने के बकायों का जल्दी से भुगतान करने में सक्षम हैं।

चीनी के निर्यात और इथेनॉल के लिए डायवर्जन के कारण चीनी क्षेत्र आत्मनिर्भर हो गया है और मिलों की तरलता में सुधार हेतु निर्यात व बफर के लिए बजटीय समर्थन करने की आवश्यकता नहीं है।

इसके अलावा, पिछले कुछ शुगर सीजनों के दौरान चीनी क्षेत्र के लिए किए गए विभिन्न अन्य उपायों के कारण, जिसमें अन्य बातों के साथ–साथ गन्ने की उच्च उपज देने वाली किस्मों के उपयोग की शुरुआत, ड्रिप सिंचाई प्रणाली को अपनाना, चीनी संयंत्र का आधुनिकीकरण और अन्य अनुसंधान एवं विकास गतिविधियां, गन्ने की खेती का क्षेत्र, गन्ने का उत्पादन, गन्ने की तराई, चीनी उत्पादन और इसका रिकवरी प्रतिशत व किसानों को भुगतान में काफी वृद्धि शामिल है।

सरकार की उम्र उसके कार्यों से नापिए

– अटल बिहारी वाजपेयी

4 जुलाई, 1998 को नई दिल्ली में आयोजित स्वागत समारोह के अवसर पर तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा दिए गए भाषण का संपादित पाठ

आपके अभिनंदन के लिए मैं आभारी हूं। थोड़ा देर में हो रहा है, मगर दोष संयोजकों का नहीं है, मेरा है। सचमुच में अभिनंदन तो एक निमित्त है, एक बहाना है। पोद्दारजी और उनके मित्रों ने तय किया कि प्रधानमंत्री राहत कोष के लिए धन का संग्रह करेंगे तो मैंने कार्यक्रम को मान लिया; उसके साथ अभिनंदन भी जुड़ गया। गुप्ताजी ने भगवान् राम का नामोल्लेख किया, भीलनी की याद दिलाई, मुझे तो ऐसा लग रहा है कि सुदामा द्वारकाधीश के यहां आया है और यह द्वारकाधीश की इच्छा पर है कि सुदामा की आकांक्षा कहां तक पूरी होती है।

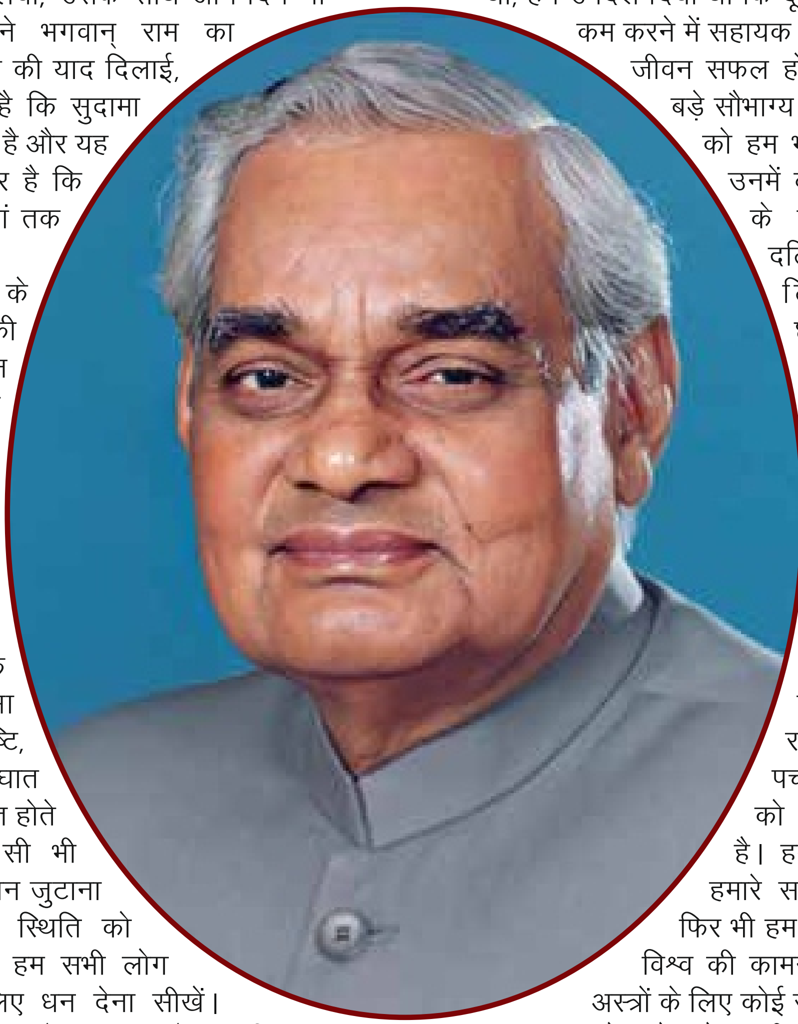

प्रधानमंत्री सहायता कोष के लिए बड़ी मात्रा में धन की आवश्यकता है। धन बड़ी–बड़ी रकमों में दिया जाए यह जरूरी नहीं है, छोटी–छोटी राशियां भी भेजी जा सकती हैं। देश में करोड़ों लोग ऐसे हैं, जिन्हें राहत की आवश्यकता है। कभी–कभी प्राकृतिक आपदा, गुजरात जैसा झंझावत, कहीं ओलावृष्टि, अतिवृष्टि, दुघर्टना, अपघात बड़ी संख्या में लोग पीड़ित होते हैं और उनकी थोड़ी सी भी सहायता करने के लिए धन जुटाना मुश्किल होता है। इस स्थिति को बदलने की जरूरत है। हम सभी लोग थोड़ा–थोड़ा देश के लिए धन देना सीखें। टैक्स के रूप में नहीं, टैक्स तो समय पर देना चाहिए, पूरा देना चाहिए; लेकिन उसके अतिरिक्त। पारिवारिक समारोह में बड़ी मात्रा में पैसा खर्च किया जाता है। उस अवसर पर आनंद होना स्वाभाविक भी है, लेकिन अगर उस समय या त्योहारों के मौके पर थोड़ा सा धन हम समाज के लिए निकालें, जरूरी नहीं है कि प्रधानमंत्री सहायता कोष में भेजें, किसी गैर सरकारी संस्था को दे सकते हैं, स्वयंसेवक संगठन को दे सकते हैं, किसी विद्यालय के लिए, किसी अस्पताल के लिए अपना योगदान कर सकते हैं। लेकिन, मन में यह भावना होनी चाहिए कि अगर हम किसी दूसरे का दु:ख बांटेंगे तो हमारा सुख बढ़ेगा।

कामये दु:ख तप्तानाम् प्राणिनामार्त नाशनम्।

हमारे पूर्वजों ने राज्य नहीं मांगा था, समृद्धि की कामना नहीं की थी, हमें उपदेश दिया था कि दूसरे की पीड़ा को अगर हम कम करने में सहायक हो सकें तो फिर हमारा यह जीवन सफल होगा। यह हमारे लिए एक बड़े सौभाग्य की बात होगी। जिन देशों को हम भौतिकवादी देश कहते हैं, उनमें बड़ी मात्रा में लोग समाज के लिए, पीड़ितों के लिए, दलितों के लिए, अपंगों के लिए दान देते हैं। छोटी–छोटी रकमों से अरबों रुपए इकट्ठे हो सकते हैं।

पोखरण के बाद भारत का संसार में एक नया स्थान बना है। हमें अलग–थलग करने की कोशिशें व्यर्थ हुई हैं और सब भारत के महत्त्व को स्वीकार कर रहे हैं, करेंगे। आखिर राष्ट्र की रक्षा सर्वोपरि है। पिछले पचास साल की कहानी मन को ठेस पहुंचानेवाली कहानी है। हमने अपनी भूमि खोई है, हमारे सम्मान को चोट लगी है। फिर भी हम धैर्य धारण करते रहे। ऐसे विश्व की कामना करते रहे, जिसमें अणु अस्त्रों के लिए कोई स्थान नहीं होगा।

जब हमारे पड़ोस में पहली बार अणु विस्फोट हुआ था तो हमने अनेक अणु शस्त्रधारी देशों से सहायता मांगी थी, उनका सहयोग प्राप्त करने का प्रयास किया था, मगर हमें निराशा हाथ लगी। तब ऐसा लगा कि आज रक्षा के मामले में, राष्ट्र की सुरक्षा के मामले में हमें अपने पैरों पर खड़ा होना पड़ेगा। उसके कारण हमारे ऊपर दबाव बढ़ा, कठिनाइयां बढ़ीं, हमारा दायित्व भी बढ़ा है। हम एक न्यूक्लियर देश हैं। यह सम्मान हमें किसी ने दिया नहीं है। यह हमने अर्जित किया है। हमारे वैज्ञानिकों की, हमारे

इंजीनियरों की, टैक्नीशियंस की इसके पीछे पचास साल की साधना है। मैं अकेले इसका श्रेय नहीं लेता। लेकिन हां परीक्षण, जब हुआ तब मेरे हाथ में बागडोर थी। यह संयोग था। सचमुच में परीक्षण तो बहुत पहले हो जाना चाहिए था। जब फ्रांस परीक्षण कर रहा था, जब चीन परीक्षण कर रहा था, परीक्षण करने पर कोई प्रतिबंध नहीं था, जब परीक्षण करना आलोचना का विषय नहीं था। तब हमारी सरकार ने परीक्षण नहीं किया। क्यों नहीं किया? फिर जब वातावरण बिगड़ा तो हम चुपचाप उसे देख नहीं सकते थे। हमने कहा कि हम अपना कर्तव्य पूरा करेंगे।

हमारे पूर्वजों ने राज्य नहीं मांगा था, समृद्धि की कामना नहीं की थी, हमें उपदेश दिया था कि दूसरे की पीड़ा को अगर हम कम करने में सहायक हो सकें तो फिर हमारा यह जीवन सफल होगा। यह हमारे लिए एक बड़े सौभाग्य की बात होगी। जिन देशों को हम भौतिकवादी देश कहते हैं, उनमें बड़ी मात्रा में लोग समाज के लिए, पीड़ितों के लिए, दलितों के लिए, अपंगों के लिए दान देते हैं

तीसरी दुनिया के देशों में हमारे अणु परीक्षणों से एक नया आत्मविश्वास पैदा हुआ है। गुटनिरपेक्ष देशों में इससे यह भावना बलवती हुई है कि संसार को एक ध्रुव पर नहीं नचाया जा सकता। आसपास जब परमाणु अस्त्रों के अंबार लग रहे हों तो हमें राष्ट्र की रक्षा के लिए जो आवश्यक कदम हैं वे उठाने हैं। वे हमने उठाए हैं। लेकिन, इसकी वजह से दबाव बढ़े हैं, कठिनाइयों में वृद्धि हुई है। कुछ ऋण मिलने बंद हो गए हैं, कुछ सहायता आनी रुक गई है। हम दबाव का भी बड़े आत्मविश्वास के साथ सामना करेंगे। दबाव के कारण हम अपनी सही नीतियों में परिवर्तन नहीं लाएंगे। हमने जो किया है, सोच–समझकर किया है। धीरे–धीरे जैसे–जैसे वक्त बीतता जा रहा है लोग हमारे कदम की उपयोगिता, हमारे कदम की आवश्यकता समझ रहे हैं, लेकिन केवल पोखरण के कारण नहीं।

वैसे भी जब हम आजादी की पचासवीं स्वर्ण जयंती मना रहे हैं, स्वर्ण जयंती पर देश की दशा को गहराई से देखना चाहिए और इस बात पर विचार करना चाहिए कि दुनिया की दौड़ में हम पीछे क्यों रह गए हैं? यह ठीक है कि अनेक देशों से हमारी स्थिति अच्छी है, लेकिन हम जैसी स्थिति चाहते हैं वैसी नहीं है।

सरकार की उम्र वर्षों में नहीं नापी जाती, उसके कार्यों में नापी जाती है। कभी एक काम ऐसा होता है, जो बरसों तक याद किया जाता है। मैं आप सब भाइयों और बहनों से कहना चाहता हूं कि आप सामाजिक कार्यों में रुचि लें। सरकार के साधन सीमित हैं, सरकार की क्षमता सीमित है, तंत्र बिगड़ा हुआ है उसको जब तक गैर सरकारी प्रयासों से ठीक नहीं किया जाएगा, सुधार नहीं किया जाएगा, तब तक तेजी से आगे बढ़ना मुश्किल होगा

'चुनाव हुए, सरकार बदली; लेकिन सरकार बदली हैं – बदले–बदले मेरे सरकार नजर आते हैं। इसके आगे की लाइन मैं नहीं कहता। घर की आबादी के आसार नजर आते हैं। चेहरे बदले हैं, अभी चाल बदलनी है और चरित्र में परिवर्तन लाना है। इस ढांचे में कुछ ऐसी दुर्बलताएं आ गई हैं, जो प्रगति के पथ पर पांव बढ़ाने में बाधक हैं। जो अब सत्ता में नहीं हैं मैं उन्हें दोष नहीं दे रहा और उस परीक्षा में मैं भी शामिल हूं, मेरी भी परीक्षा हो रही है, मेरा भी इम्तिहान हो रहा है। क्या जनता की इतनी आकांक्षाओं और अपेक्षाओं के अनुरूप हम अपना काम कर सकेंगे? क्या कठिनाइयों की लहरों के बीच में से निकालकर हम राष्ट्र की नौका को समृद्धि के तट तक ले जा सकेंगे? आरंभ हुआ है और अच्छा आरंभ हुआ है।

गंगावतरण हमने देखा। गंगा जब आई पवित्र थी, आज गंगा को पवित्र रखने के लिए अभियान चलाना पड़ रहा है। हम पहले गंगा को गंदी करते हैं और फिर उसकी सफाई करते हैं। यह जमुना पर भी लागू होता है। गंगा के कारण आप यह नहीं समझें कि दूर की बात कर रहे हैं। प्रदूषण के कारण क्या स्थिति है?

आजकल कभी–कभी पार्लियामेंट में बड़ा आनंद आता है। थोड़े दिन पहले प्रतिपक्ष में बैठकर या खड़े होकर हम जो कुछ कहते थे, वे बातें आजकल हमें सुननी पड़ रही हैं। जब से हम सत्ता पक्ष में आए हैं, हमारे मित्र हमारी बातें दोहरा रहे हैं और हमें कटघरे में खड़ा करने की कोशिश कर रहे हैं। हमने अभी तक ऐसा कोई काम नहीं किया, जिसके लिए हम कटघरे में खड़े किया जा सकें। जो कुछ किया है ठीक दिशा में किया है। उसकी गति से हम भी संतुष्ट नहीं है, लेकिन आरंभ अच्छा है और अंत भी अच्छा होगा।

सरकार की उम्र वर्षों में नहीं नापी जाती, उसके कार्यों में नापी जाती है। कभी एक काम ऐसा होता है, जो बरसों तक याद किया जाता है। मैं आप सब भाइयों और बहनों से कहना चाहता हूं कि आप सामाजिक कार्यों में रुचि लें। सरकार के साधन सीमित हैं, सरकार की क्षमता सीमित है, तंत्र बिगड़ा हुआ है उसको जब तक गैर सरकारी प्रयासों से ठीक नहीं किया जाएगा, सुधार नहीं किया जाएगा, तब तक तेजी से आगे बढ़ना मुश्किल होगा। इसीलिए मैंने पोद्दारजी का प्रस्ताव मान लिया। मैं स्वार्थ से आया हूं, लेकिन मेरा स्वार्थ सार्वजनिक स्वार्थ है। कोई व्यक्तिगत स्वार्थ नहीं है। मैं ऐसोसिएशन को बधाई देना चाहता हूं कि उन्होंने एक ठोस प्रयत्न किया। वे अपने कार्यक्रम सफलतापूर्वक करते रहें, नव–चेतना जागृत करें, सांस्कृतिक समृद्धि में हाथ बंटाएं, मगर साथ–साथ, जिन लोगों को राहत की आवश्यकता है उनका भी ध्यान रखें।

बाबू जी के शासन में सुशासन की नींव पड़ी : योगी

कल्याण सिंह 'बाबूजी' के शासन में जो सुशासन की नींव रखी गई थी वह आज उत्तर प्रदेश के समग्र विकास के आधार को साबित करता है। ये बातें मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने रविवार को पूर्व सीएम कल्याण सिंह की प्रथम पुण्यतिथि पर कल्याण सिंह सुपर स्पेशियलिटी कैंसर संस्थान में उनकी 9 फुट की प्रतिमा के अनावरण पर कहीं। पिछले 70 वर्षों में प्रदेश में केवल 12 मेडिकल कॉलेज स्थापित हुए थे जबकि पिछले पांच वर्षों में केंद्र और राज्य सरकार के प्रयास से 35 नए मेडिकल कॉलेज बने हैं। गोरखपुर में एम्स शुरू हो चुका है, जबकि वाराणसी में कैंसर इंस्टीट्यूट शुरू हो चुका है। प्रदेश आज देश की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की ओर अग्रसर है।

मुख्यमंत्री योगी ने कहा कि जब भी सुशासन की बात आती है तो आजादी के बाद पहली ऐसी सरकार जो हम सबकी स्मृतियों में है, जिस सरकार ने जो कहा करके दिखाया, वह सच्चे अर्थों में बाबूजी की ही वर्ष 1991 की सरकार थी। इस सरकार ने प्रदेश में जो सुशासन के मानक तय किए थे, उसी मानक के अनुरूप अपनी कार्य पद्घतियों से गांव, गरीब, किसान, नौजवान, महिलाएं, समाज के प्रत्येक तबके के हितों के साथ ही अपनी सांस्कृतिक और आध्यात्मिक धरोहर को अक्षुण्ण बनाए रखा। बाबूजी की सरकार ने न केवल प्रदेश की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक धरोहर को संरक्षित किया, बल्कि उस समय जब प्रदेश एक संक्रमण के दौर से गुजर रहा था तब प्रदेश को संभाला। पूववर्ती सरकार की नीतियों के कारण प्रदेश में जगह–जगह दंगे हो रहे थे, आतंकवाद की सुगबुगाहट हो रही थी। इन परिस्थितियों में बाबूजी ने प्रदेश की बागडोर संभाली थी और सरकार की धमक क्या होती है उसे सुशासन की पुख्ता नींव रखकर साबित कर दिया जो आज प्रदेश के सम्रग विकास की आधारशिला है।

स्व0 कल्याण सिंह जी की प्रथम पुण्यतिथि

मुख्यमंत्री ने कहा कि अत्याधुनिक स्वास्थ्य सुविधाओं से परिपूर्ण यह संस्थान बाबूजी के नाम के अनुरूप प्रदेश के कल्याण का कारक बनेगा। वर्तमान में चिकित्सा संस्थान में 734 बिस्तरों की क्षमता है, जिसे बढ़ाकर 1200 बिस्तर किया जा रहा है।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि आज उत्तर प्रदेश 'एक जिला एक मेडिकल कॉलेज' के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए समर्पित रूप से काम कर रहा है और सभी मेडिकल कॉलेजों का नाम उन महापुरुषों के नाम पर रखा जाएगा जिन्होंने राज्य के विकास में योगदान दिया और इतिहास रचा। सीएम ने कहा कि किसी व्यक्ति की योग्यता की कसौटी का मानक उसका भाषण या उसके द्वारा प्रचार प्रसार नहीं हो सकता है। मानवता जब संकट के दौर से गुजर रही हो तब ही किसी व्यक्ति की योग्यता और क्षमता का आकलन किया जा सकता है। इस सदी की सबसे बड़ी महामारी ने साबित कर दिया है कि उत्तर प्रदेश में असीम क्षमता है। वह बड़ी से बड़ी चुनौती का सामना कर सकता है। पिछली सरकारों को आड़े हाथ लेते हुए योगी ने यह भी कहा कि राज्य सरकार बाबूजी के समग्र ग्रामीण विकास के विजन को साकार करने के लिए काम कर रही है और यही कारण है कि 2017 से पहले जहां ग्रामीण क्षेत्र अंधेरे में डूबे रहते थे, आज एलईडी लाइटों से जगमगा रहे हैं।

शेष नारायण जी का निधन संगठन की अपूर्णीय क्षति

भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष व प्रदेश प्रभारी श्री राधा मोहन सिंह, राष्ट्रीय महामंत्री श्री सुनील बंसल, प्रदेश अध्यक्ष श्री स्वतंत्र देव सिंह व प्रदेश महामंत्री संगठन श्री धर्मपाल सिंह जी ने अवध क्षेत्र के क्षेत्रीय अध्यक्ष शेष नारायण मिश्र के निधन पर गहरा शोक व्यक्त किया है। पार्टी के अवध क्षेत्र के क्षेत्रीय अध्यक्ष शेष नारायण मिश्र जी का 12 अगस्त सुबह लगभग 5 बजे संजय गांधी आयुर्विज्ञान संस्थान एसजीपीजीआई लखनऊ में इलाज के दौरान असामयिक निधन हो गया। पार्टी के राज्य मुख्यालय पर उनके पार्थिव शरीर पर प्रदेश अध्यक्ष स्वतंत्र देव सिंह व अन्य पार्टी पदाधिकारियों और बड़ी संख्या में एकत्र कार्यकर्ताओं ने श्रद्धांजलि अर्पित की।

प्रदेश प्रभारी राधा मोहन सिंह ने भाजपा अवध क्षेत्र के क्षेत्रीय अध्यक्ष शेष नारायण मिश्रा जी के आकस्मिक निधन की दु:खद बताते हुए कहा कि उनका निधन पार्टी के लिए अपूरणीय क्षति है। दु:ख के इस समय में ईश्वर परिवार को शक्ति प्रदान करे और ईश्वर पुण्य आत्मा को अपने श्रीचरणों में स्थान दे।

राष्ट्रीय महामंत्री सुनील बंसल ने ट्वीट कर कहा कि क्षेत्रीय अध्यक्ष शेष नारायण मिश्रा जी का आज प्रातः आकस्मिक निधन अत्यन्त ही दु:खद है। ईश्वर से प्रार्थना करता हूं पुण्यात्मा को अपने श्रीचरणों में स्थान दें एवं उनके परिजनों को यह असीम दु:ख सहने की शक्ति प्रदान करे।

प्रदेश अध्यक्ष स्वतंत्र देव सिंह ने पार्टी के राज्य मुख्यालय पर अवध क्षेत्र के अध्यक्ष शेष नारायण मिश्रा जी के पार्थिव शरीर पर पुष्पांजलि अर्पित कर श्रद्धांजलि दी। उन्होंने कहा कि अवध क्षेत्र के अध्यक्ष शेष नारायण मिश्रा जी का आकस्मिक निधन हम सभी के लिए अत्यंत ही दुरूखद है। ईश्वर पुण्यात्मा को अपने श्रीचरणों में स्थान दे।

प्रदेश महामंत्री संगठन धर्मपाल सिंह जी ने ट्वीट कर कहा कि भाजपा अवध क्षेत्र के क्षेत्रीय अध्यक्ष शेष नारायण मिश्रा जी के आकस्मिक निधन की दु:खद सूचना प्राप्त हुई। इस दु:ख के समय में ईश्वर परिवार को शक्ति प्रदान करे। ईश्वर पुण्य आत्मा को श्रीचरणों में स्थान दे।

15 अगस्त अमृत महोत्सव ध्वजा रोहण भाजपा मुख्यालय, लखनऊ।

क्षेत्रीय बैठक अवध, कानपुर, काशी, गोरक्ष, भाजपा मुख्यालय, लखनऊ

पत्रिका पंजीकरण – RNI-51899/91 डाक पंजीकरण – SSP/LW/NP-117-2021-23
अगस्त द्वितीय अंक 2022 – प्रेषित डाकघर – R.M.S. चारबाग, लखनऊ – प्रेषण तिथि : 26–29 (द्वितीय पाक्षिक)

भारतीय जनता पार्टी के लिए मुद्रक तथा प्रकाशक प्रो. श्यामनन्दन सिंह द्वारा नूतन ऑफसेट मुद्रण केन्द्र, संस्कृति भवन, राजेन्द्र नगर, लखनऊ से मुद्रित व भाजपा कार्यालय, 7, विधानसभा मार्ग, लखनऊ से प्रकाशित। सम्पादक : अरूण कान्त त्रिपाठी